संजय की कलम से ..

हमारा आहार

प्रायः आहार को सतोगुणी, रजोगुणी और तमोगुणी इन तीन श्रेणियों के अंतर्गत माना जाता है। जितने उत्तेजक, मादक, बहुत ही चटपटे, गरिष्ठ अर्थात् देर से हजम होने वाले, सड़े हुए या निद्रा अथवा आलस्यादि पैदा करने वाले पदार्थ हैं वे तमोगुणी माने जाते हैं। माँस, मछली, लहसुन, प्याज इत्यादि इसी श्रेणी के अंतर्गत हैं। शराब, बीड़ी, सिगरेट ये सभी तमोप्रधान हैं और मनुष्यात्मा का अधोपतन करने वाले हैं। इस प्रकार के पदार्थ योगाभ्यास में और मन को निर्मल तथा संतुलित रखने में बहुत ही बाधक होते हैं। मनुष्य को चाहिए कि वह इनको त्याग दे।

इसी प्रकार, स्वाद को प्रधानता देकर, जीभ की रसना के लिए बनाये गये, इंद्रियों के वश होकर खाये जाने वाले और जीवन में भोग-विलास की भावना पैदा करने वाले अथवा भारी पदार्थ रजोगुणी श्रेणी के पदार्थ माने जाते हैं। फल, सब्जियाँ, युक्ति-युक्त रीति से पकाया गया अन्न इत्यादि सतोगुणी आहार माना जाता है। अतः जबकि हमें महान अथवा सतोगुणी स्वभाव का बनना है और जबकि हमारा योग मन अथवा बुद्धि का योग है तो हमें सतोगुणी आहार ही करना चाहिए ताकि निद्रा अथवा आलस्य का विघ्न न पड़े, मन उत्तेजित अथवा मूढ़ न हो और बुद्धि इंद्रियों के वश न हो जाये क्योंकि बुद्धि के शुद्ध और सचेत न रहने से वह परमपिता परमात्मा से शक्ति और आनन्द पूरी तरह न ले सकेगी और ठीक रीति सत्य-असत्य अथवा पाप-पुण्य का निर्णय भी न कर सकेगी।

भोजन बनाने वाले के मन का अन्न पर प्रभाव

भोजन बनाते समय प्रायः यह तो ख्याल रखा ही जाता है कि रसोई साफ हो, भोजन के बर्तन स्वच्छ हों, वस्त्र साफ हों और पदार्थों को ढककर रखा जाये ताकि उनमें गंदगी न पड़ जाये और उन पर मक्खी न बैठे। परंतु जैसे यह बाहरी स्वच्छता जरूरी है, वैसे ही भोजन बनाने वालों की मानसिक पवित्रता भी आवश्यक है अर्थात् भोजन बनाने वाले के मन में अच्छे विचार होने चाहिएँ। इसके साथ-साथ कमाने वाले व्यक्ति की पवित्र मनसा, भोजन के लिए खरीदे गये पदार्थ की पवित्रता तथा खाने वाले के भी विचारों की पवित्रता, मन की शांत स्थिति बहुत जरूरी है। ❖

अमृत-सूची

◈ होली का आध्यात्मिक रहस्य (सम्पादकीय) 4
◈ प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के .7
◈ गॉडलीवुड स्टूडियो 9
◈ 'पत्र' संपादक के नाम 13
◈ माता के साथ गुरु भी बनिए ..14
◈ सच्चे दिल पर साहब राजी....16
◈ मन जीते जगतजीत...........17
◈ जीवन का स्वर्ण काल 19
◈ तो कुछ बात बने *(कविता)* ... 21
◈ राजयोग- संपूर्ण सुरक्षा.......22
◈ कर्म कौशल ही तो योग है ...23
◈ ज्ञान-गंगाओं की गंगोत्री......24
◈ कैदी है तन, आजाद है मन ..26
◈ दादी ने सिखाया रिगार्ड देना..28
◈ सबसे बड़ी जीत..............29
◈ सचित्र सेवा समाचार 30
◈ संबंध एक परमपिता से.......32
◈ ग्लोबल हॉस्पिटल में..........33
◈ सचित्र सेवा समाचार 34

फार्म – 4

नियम 8 के अंतर्गत अपेक्षित पत्रिका का विवरण

1. **प्रकाशन** : ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड (राजस्थान)-307510
2. **प्रकाशनावधि** : मासिक
3. **मुद्रक का नाम** : ब्र.कु. आत्म प्रकाश
   क्या भारत का नागरिक है? हाँ
   पता – उपरोक्त
4. **प्रकाशक का नाम** : ब्र.कु. आत्म प्रकाश
   क्या भारत का नागरिक है? हाँ
   पता – उपरोक्त
5. **सम्पादक का नाम** : ब्र.कु. आत्म प्रकाश
   क्या भारत का नागरिक है? हाँ
   पता – उपरोक्त

सम्पूर्ण स्वामित्व : प्रजापिता ब्र.कु.ई.वि.विद्यालय

मैं, ब्र.कु. आत्म प्रकाश, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही हैं।

(ब्र.कु. आत्म प्रकाश)
सम्पादक

होली का आध्यात्मिक रहस्य

आजकल हम होली पर्व के नाम पर एक मनुष्य द्वारा दूसरे मनुष्य पर रंगों के साथ-साथ कीचड़ और गंदा पानी फेंका जाता हुआ देखते हैं। भारत के कुछ गाँवों में, विशेष नातों में (जैसे भाभी-देवर), एक द्वारा दूसरे की मोटी रस्सी या डंडे से पिटाई करने की प्रथा भी इस दिन है। भले ही, पिटने वाला उस समय लोकलाजवश बोलता नहीं है पर इस प्रकार की हिंसा का कुप्रभाव तो सभी पर पड़ता ही है। अन्य त्योहारों पर जहाँ लोग घरों से बाहर निकलकर चहल-पहल देखने को उतावले होते हैं, होली पर लोग दरवाजा बंद कर दुबके रहते हैं। यह देख मन में प्रश्न उठता है कि आखिर भी इस त्योहार का वास्तविक रहस्य क्या है?

प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में परमपिता परमात्मा शिव ने अन्य त्योहारों के साथ-साथ होली के त्योहार के मूल स्वरूप का भी ज्ञान कराया है जिसे जानकर रोम-रोम रोमांचित हो उठता है। सभी प्रश्नों के हल मिल जाते हैं और जीवन को ऊँचा उठाने में बहुत मदद मिलती है। वास्तव में, भारत के जितने भी त्योहार हैं, वे सब भगवान के धरती पर अवतरित होने और मानव कल्याण के लिए किये जाने वाले उनके भिन्न-भिन्न कर्त्तव्यों की यादगारें हैं।

परमात्म संग का रंग

होली भी, भगवान द्वारा आत्माओं को अपने संग के रंग में और ज्ञान के रंग में रंगने के कर्त्तव्य का यादगार है। ज्ञान को 'सच्ची पूंजी', 'अविनाशी खजाना', 'परम औषधि', 'अमृत', 'अंजन', 'प्रकाश' और 'प्रभु की मस्ती में रंग देने वाला रंग' भी कहा गया है। प्रभु के संग से आत्मा में जो अलौकिक निखार आता है, उसे ज्ञान का रंग चढ़ना कहा जाता है। कबीर ने कहा,

'लाली मेरे लाल की
जित देखूँ तित लाल,
लाली देखन मैं गई,
मैं भी हो गई लाल'

अर्थात् प्रभु के संग का रंग ऐसा लगा जो आत्मा उनके समान बन गई। कालान्तर में, 'परमात्म संग का रंग' में से 'परमात्म संग' शब्द तो निकल गया और होली मात्र रंगों का त्योहार रह गया।

एक छोटी-सी भूल

उपरोक्त कारण से ही बरसों से होली मनाते रहने पर भी भगवान का कोई भी रंग आज तक मानवता पर चढ़ा नहीं। भगवान प्रेम के सागर हैं पर हमारे प्रेम के स्रोत सूख गए। भगवान शान्ति के सागर हैं पर हम शान्ति की खोज में मारे-मारे फिर रहे हैं। भगवान सुख के सागर हैं पर हमें पल भर चैन नहीं। भगवान शक्तियों के सागर हैं पर हम निर्बल, अशक्त, कमज़ोर हो गये हैं। भगवान ज्ञान के सागर हैं पर हम अज्ञान अंधकार में ठोकरें खा रहे हैं क्योंकि हमने भी पहले शब्द 'परमात्म संग' को भुला दिया।

'होली' शब्द के अर्थ

परमपिता परमात्मा शिव ने हमें होली शब्द के तीन अर्थ बताये हैं – (1) होली अर्थात् बीती सो बीती, जो हो गया उसकी चिन्ता न करो तथा आगे के लिए जो भी कर्म करो, योगयुक्त होकर करो, (2) होली अर्थात् हो गई। मैं आत्मा अब ईश्वर अर्पण हो गई, अब जो भी कर्म करना है, वह ईश्वर की मत पर ही करना है, (3) होली (Holy) अर्थात् पवित्र। हमें जो भी कर्म करने हैं, वे किसी भी विकार के वश होकर नहीं वरन् पवित्र बुद्धि से करने हैं।

होली मनाने का समय

होली का त्योहार वर्ष के अंतिम मास फाल्गुन की पूर्णिमा को मनाया जाता है। सृष्टि चक्र के दो भाग हैं, ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात्रि। ब्रह्मा का दिन है सतयुग-त्रेतायुग।

उस समय सभी देवात्मायें ईश्वरीय रंग में रंगी होती हैं परंतु जब द्वापरयुग आता है और ब्रह्मा की रात्रि का प्रारंभ होता है तो मानवात्मायें माया (विकारों) से बदरंग होने लगती हैं। कलियुग के अंत तक तो इतनी बदरंग हो जाती हैं कि अपनी असली पहचान से पूरी तरह दूर चली जाती हैं, तब निराकार परमात्मा शिव धरती पर अवतरित होकर विकारों से बदरंग बनी आत्माओं को अपने संग का रंग लगाते हैं। उन्हें उजला बनाए उनमें ज्ञान, शान्ति, प्रेम, सुख, आनन्द, पवित्रता, शक्ति आदि गुण भरकर देवतुल्य बना देते हैं। चूंकि यह घटना कल्प के अंत में घटती है इसलिए यादगार रूप में यह त्योहार भी वर्ष के अंतिम मास के अंतिम दिन मनाया जाता है। भगवान जब आते हैं तो स्वयं तो ज्ञान-गुणों का रंग आत्माओं पर लगाते ही हैं पर जिन पर ज्ञान-गुणों का रंग लग जाता है, उन्हें यह आदेश भी देते हैं कि अब तुम अन्य आत्माओं पर भी यह रंग लगाओ। इसी की याद में इस त्योहार पर मनुष्य एक-दो को गुलाल आदि लगाते हैं।

वास्तविक ईश्वरीय कर्त्तव्य चलता है कई वर्ष

हम यह भी जानते हैं कि बच्चे का जन्म, नामकरण संस्कार और अन्य रस्म अदायगी में लगभग सवा महीना लग जाता है लेकिन जन्मदिन का उत्सव घंटे, दो घंटे में पूरा हो जाता है। भारत की आज़ादी की लड़ाई में भी लगभग सौ साल का अति सक्रिय आंदोलन चला। लेकिन उसके यादगार उत्सव को घंटे, दो घंटे या बारह घंटे तक मनाकर पूरा कर लेते हैं। इसी प्रकार परमात्मा शिव द्वारा ज्ञान के रंग में मनुष्यों को रंगने का कर्त्तव्य केवल एक या दो दिन नहीं, वर्ष भर नहीं लेकिन लगातार कई वर्षों तक चलता है। ईश्वरीय कर्त्तव्य का यह संपूर्ण काल ही सच्ची होली है। लेकिन भक्तों द्वारा, कई वर्ष चलने वाले ईश्वरीय कर्त्तव्य की यादगार के रूप में केवल एक या दो दिन गुलाल आदि डालकर, लकड़ियाँ और उपले जलाकर होली मना ली जाती है।

होली के संबंध में प्रचलित कथा का रहस्य

हिरण्यकश्यप, होलिका तथा प्रह्लाद की कथा का वास्तव में आध्यात्मिक रहस्य है। जो लोग प्रह्लाद की तरह स्वयं को परमात्मा का एक वत्स (पुत्र) निश्चय करते हैं, उन्हीं से परमात्मा की प्रीति होती है और जो लोग हिरण्यकश्यप की तरह मिथ्या ज्ञान के अभिमानी हैं, स्वयं को भगवान मानते हैं, वे विनाश को प्राप्त होते हैं और होलिका की तरह जो आसुरियता का साथ देते हैं, वे भी विनाश को पाते हैं। यह जो कहा गया है कि हिरण्यकश्यप ने वर प्राप्त किया था कि 'न मैं दिन में मरूँ, न रात में', 'न अंदर मरूँ, न बाहर', 'न किसी मनुष्य द्वारा मरूँ, न देवता द्वारा' यह भी संगमयुग की ही बात है। यह संगमयुग अतुलनीय युग है। यह न ब्रह्मा का दिन है और न ब्रह्मा की रात्रि, यह दोनों का संगम है। यहाँ न मानव हैं, न देव वरन् तपस्वी ब्राह्मण हैं। अत: तपस्या के बल द्वारा मिथ्या ज्ञान के अभिमान और आसुरी वृत्तियों का अंत इसी समय होता है।

होली मनाने की विधि

होली के त्योहार को मनुष्य चार प्रकार से मनाते हैं – 1. एक-दूसरे पर रंग डालना, 2. होलिका जलाना, 3. मंगल मिलन मनाना, 4. श्रीकृष्ण की झांकी सजाना

1.एक-दूसरे पर रंग डालना:-

भगवान आत्मा पर ज्ञान, गुण और शक्तियों का रंग लगाते हैं परंतु मनुष्य महंगे रंगों द्वारा मानव के कपड़ों और कई बार तो चेहरे, आँखों और गले को भी नुकसान पहुँचा देते हैं। इस प्रकार, इस निर्धन देश के करोड़ों रुपये रंगों और रंगे हुए कपड़ों की भेंट चढ़ जाते हैं। क्या ही अच्छा हो, यदि हम होली को विकृत रूप में न मनाकर, इसके शुद्ध स्वरूप में जैसे भगवान ने सिखाई थी, वैसे ही मनाएँ।

मीरा के एक सुन्दर भजन से भी हमें ऐसी ही प्रेरणा मिलती है। भजन इस प्रकार है –

फागुन के दिन चार,
होली खेल मना रे।
बिन करताल पखावज बाजै,
अनहद की झणकार रे।
बिन सुर राग छत्तीसूँ गावै,
रोम रोम रणकार रे।।
सील संतोष की केसर घोली
प्रेम प्रीति पिचकार रे।
उड़त गुलाल लाल भयो
अम्बर बरसत रंग अपार रे।।
घट के सब पट खोल दिये हैं
लोकलाज सब डार रे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
चरण कंवल बलिहार रे।।

मीरा कहती है, होली मनाना अर्थात् निरंतर अनहद नाद सुनना। शील, संतोष की केसर घोलकर प्रेम की पिचकारी छोड़ना, लोकलाज छोड़कर आत्मदर्शन करना और परमात्मा पर बलिहार हो जाना।

2. होलिका जलाना:- इस दिन लोग, अनेक घरों से इकट्ठी की हुई लकड़ियों और गोबर को जलाते हैं और सोचते हैं, इससे दुख, दरिद्रता, अपवित्रता जल जायेगी परन्तु सोचने की बात है, भारत के देहातों में तो सदियों से प्रतिदिन लोग गोबर और लकड़ियाँ जलाते आ रहे हैं परंतु दरिद्रता और अपवित्रता तो जली नहीं, और ही बढ़ती जा रही है। वास्तव में लकड़ियों और कण्डों को अग्नि में नहीं बल्कि योगाग्नि में पुराने संस्कार, स्वभाव, पुरानी कटु स्मृतियाँ जला देने से हमारे दुख दूर हो सकते हैं। कहीं-कहीं उपलों में धागे डालकर भी होलिका जलाने की प्रथा है, वह इस रहस्य का परिचय देती है कि यह शरीर उपलों की तरह विनाशी है। एक दिन राख में बदल जाना है परंतु आत्मा अविनाशी है, उसे अग्नि जला नहीं सकी। कई लोग इसे राक्षस विनाशक त्योहार भी मानते हैं क्योंकि यह माया रूपी राक्षसी को ज्ञान रूपी हो-हल्ले से भगाने का त्योहार है।

3. मंगल मिलन मनाना:- मंगल का अर्थ है कल्याण। कल्याण करने वाला मिलन तो परमात्म-मिलन ही है। दूसरा, मंगल मिलन तो तभी हो सकता है जब आपस में स्वभाव, संस्कार का मेल हो, एक-दूसरे के विचारों का सम्मान हो। यह भी तभी हो सकता है जब हम देहभान के स्वभाव, संस्कार को भूलकर आत्मस्थिति में टिकें। आत्मस्थिति में टिककर हम स्वयं से, अन्य आत्माओं से और परमात्मा से भी सच्चा मंगल मिलन मना सकते हैं।

4. श्रीकृष्ण की झांकी सजाना:- पंडित लोग कहते हैं कि ब्रह्मपुराण में लिखा है कि फाल्गुन पूर्णिमा के दिन जो मनुष्य चित्त को एकाग्र करके हिंडोले में झूलते हुए श्रीगोविन्द पुरुषोत्तम का दर्शन करता है वह निश्चय ही वैकुंठ को जाता है। वास्तव में दर्शन का अर्थ है पहचान। जो श्रीकृष्ण की सच्ची जीवन-कहानी को पहचान जाता है, वह संसार के आकर्षणों से परे हो जाता है और वैकुंठ का अमरपद तो उसे अवश्य मिलता ही है। अत: केवल दर्शन (देखना) न करें बल्कि श्रीकृष्ण को पहचानें, जानें, उन जैसे कर्मों का अनुकरण करें।

'होलिका' शब्द का अर्थ

कई लोगों का कहना है कि 'होलिका' शब्द का अर्थ है 'भुना हुआ अन्न'। होलिका के अवसर पर लोग गेहूँ और जौ की बालों को भूनते हैं। वास्तव में यह भी एक आध्यात्मिक रहस्य को उजागर करता है। जैसे भुना हुआ अन्न आगे उत्पत्ति नहीं करता, ऐसे ही ज्ञान-योग की अग्नि में तपकर किया गया कर्म भी अकर्म हो जाता है। भगवान द्वारा बताई गई उपरोक्त विधि से होली मनाने से अवश्य ही आत्मा का कल्याण होगा और इस भारत देश में फिर से भ्रातृप्रेम भरपूर होगा। गाय-शेर इकट्ठे जल पियेंगे और सभी रिश्तों-नातों में पारस्परिक प्रेम की सुगंध होगी।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

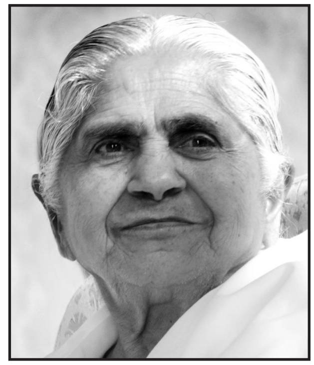

दिव्यबुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ... — सम्पादक

प्रश्नः- मनसा सेवा की विधि क्या है?

उत्तरः- अभी मनसा सेवा से आटोमेटिकली सब लेन-देन होगी। पहले मेरा ही मन मेरी सेवा करे। पहले हम मन के गुलाम थे, अभी मन को बाबा में लगा दिया है, तो मन बड़ा साथ दे रहा है, हमारे कंट्रोल में, ऑर्डर में रहता है, औरों की सेवा पीछे करेगा, पहले मन मेरा ऐसा लायक बने। फिर मन के साथ कनेक्शन है दिल का। दिल सेवा नहीं कहते हैं, मनसा सेवा कहते हैं। तो पहले दिल से पूछना है कि दिल कोई इच्छा-ममता रखकर तो नहीं बैठा है? मन सेवा करना चाहता है पर दिल कोई इच्छा-ममता में फँसा हुआ है। मनसा सेवा के लिए बुद्धि शुद्ध संकल्पों वाली चाहिए। शुद्ध संकल्पों का हमारे पास स्टॉक हो, जैसे खाने-पीने की चीज़ों का, पानी का स्टॉक चाहिए। जो स्टॉक का ध्यान रखते हैं, वे ही यज्ञ के रक्षक हैं। ऐसे नहीं स्टॉक संभालने वाले थोड़े अलबेले हो जायें, शान नहीं है। भले इतने सब खाते जायें और भरता जाये। ध्यान रखना है, कम न हो जाये। पता रहे कि इतने खा रहे हैं, छह महीने का, बारह महीने का स्टॉक रखा हो। ऐसे मन में भी शुभ भावना का स्टॉक चाहिए। उसके लिए सदा मन शुभ चिंतन में, मनन-चिंतन में रहे। दूसरी जगह न चला जाये।

मनसा सेवा करना बिल्कुल सिम्पल है। सिर्फ सपूत बन सबूत देना है। सपूत बनने में ही सबूत है। कभी एक पेनी भी अलमारी में रखना, पर्स में रखना ऑनेस्टी नहीं है। मेरे पास कुछ भी नहीं है। थैला, पर्स उठाने का अक्ल ही नहीं है। क्या करेंगे? मनसा फ्री है, अगर कोई चीज़ होगी तो अटेन्शन जायेगा कि यह गुम न हो जाये। याद करना नहीं है पर और कोई बात याद न आवे। कोई कहते हैं, दो महीना पहले यह बात तुमको सुनाई थी, अरे, वह मुझे याद नहीं है। अच्छी-अच्छी बातें, मम्मा-बाबा, दीदी-दादी की याद हैं, शिक्षायें याद हैं, बातें याद नहीं हैं। असुल याद नहीं आती हैं। कोई अच्छा है, अच्छा सेवा-साथी है उसकी याद आना भी भूल है। कोई अच्छा नहीं करता है, खराब है, यह भी याद आया तो मेरी मनसा कैसी हुई। पहले अच्छा था, अभी अच्छा नहीं है, यह ख्याल आया तो भी मनसा सेवा कैसे करेंगे।

मनसा सेवा करने के लिए मन बड़ा खुश और शुद्ध चाहिए। शुभ भावना रखो तो आपेही पहुंचती है। ईर्ष्या-द्वेष अति सूक्ष्म हैं। पता नहीं पड़ता है, मेरे में ईर्ष्या है, पर कोई न कोई से है जो तन को भी बीमार कर देती है, मन-बुद्धि को भी बीमार कर देती है। ड्रामा बड़ा अच्छा है, बाबा ने सब बातों से छुड़ा करके त्याग से भाग्य बना दिया है। हमने त्याग नहीं किया है, आपेही छूट गया है। भाग्यवान हैं जो छूट गया।

अपने को कम्फर्ट में रहने की आदत डालना, तकिया भी अच्छा हो, ब्लैंकट भी अच्छा हो, खटिया भी अच्छी हो, प्लीज ऐसी आदतें नहीं डालो। अरे धरती पर सो करके खुश

रहकर दिखाओ। बाबा की याद में अच्छी तरह सो जाओ। तो मनसा सेवा के लिए मनसा बड़ी अच्छी चाहिए। ड्रामा अच्छा है, बाबा अच्छा है, सब अच्छा है। दाता, वरदाता मेरा बाबा है ना, कितनी अच्छी-अच्छी बातें हैं। कभी चेहरे पर थकावट भी न आवे, चिड़चिड़ापन भी न आये, तो मनसा सेवा मन अपने आप करता है। सिर्फ कहता है, तुम शांत करके ऐसे बैठो जैसे तुम्हारा बाबा। बाबा को हम याद नहीं करती पर बाबा के सामने बैठती ज़रूर हूँ। जैसे मेरा बाबा, उसमें और हमारे में अंतर न रहे।

प्रश्नः- बाबा के सूक्ष्म इशारे कब सुनाई पड़ते हैं?

उत्तरः- बुद्धि को शांत होने की आदत हो तो बाबा के जो सूक्ष्म इशारे हैं वो सुनाई पड़ते हैं। सिर्फ एकाग्रता की शक्ति की ज़रूरत है। एकाग्रता की शक्ति हमको शांतप्रिय बनाती है। शान्ति ही हमारे गले का हार है। कार्य-व्यवहार में रहते किसी का भी स्वभाव-संस्कार हमको स्पर्श न करे तो शान्ति गले का हार है, नहीं तो भाव-स्वभाव हार उतार देता है। स्वधर्म में रहने नहीं देता है। किसके बच्चे हैं, कौन-सा हमारा धर्म है, वो भूल जाते हैं। हमारा धर्म कौन-सा है, शान्ति धर्म है तो सत्यता, कर्म है। अगर शान्ति हमारा धर्म नहीं तो कर्म में सत्यता नहीं आ सकती, असत्यता मिक्स हो जाती है। शान्ति धर्म है, कर्म सत् है और संबंध श्रेष्ठ है। हमारे संकल्पों में भी इतनी पावर हो जो गरम वायुमण्डल को ठण्डा बना सकें। सहनशक्ति से ठण्डा बनना है। लेकिन अगर सिर्फ ठण्डे होंगे तो नेगेटिव वातावरण के फोर्स का दबाव होगा, इसलिए पुरुषार्थ में ठण्डा नहीं होना है, अटेन्शन पूरा हो। औरों की ग़लती देखने की ज़रूरत नहीं है, अपनी ग़लती जल्दी दिखाई पड़े। अपने को अच्छी तरह से देखने की रोशनी मिल रही है। बाबा कहते, विकल्प आया माना तूफान आया और जब आयेगा तो छोड़ेगा नहीं। कोई तूफान आता है तो पता नहीं चलता कि कहाँ से आया और कहाँ तक पहुँचेगा। तो संकल्प की बहुत अच्छी तरह देखभाल करनी है।

प्रश्नः- महारथी किसे कहेंगे?

उत्तरः- बाबा महारथी उसे कहता जो कोई भी बात अंदर ही अंदर खत्म कर दे, माइन्ड नहीं करे। घोड़ेसवार को माइन्ड हो जाता है। वह अपमान कर लेता है या कोई उसका अपमान करता है तो सहन नहीं होता है। और सब बातें सहन हो सकती हैं, अपमान कोई कर दे तो सहन नहीं होता। स्वमान में रहने वाले को अपमान फील नहीं होता। इसलिए बाबा कहता है, स्वदर्शन चक्र फिराओ, स्वमान में रहो। ड्रामा अनादि बना-बनाया है, ड्रामा का ज्ञान संकल्पों को शांत बना देता है। संकल्प की उत्पत्ति की जो आदत है, पहले उत्पत्ति हो जाती फिर पालना करते, फिर विनाश करना मुश्किल हो जाता है। पालना की तो वह जायेगा नहीं, अपने वश कर लेगा। आखिर भी इसका हल होना चाहिए, ऐसा कब तक चलता रहेगा..यह आवाज़ कैसा है! वास्ट डिफरेन्ट है स्वदर्शन, परदर्शन में और स्वचिंतन, परचिंतन में।

प्रश्नः- अपने पर कृपा का क्या अर्थ है?

उत्तरः- चार्ट अच्छा रखना माना अपने ऊपर कृपा करना। बाबा की हमारे ऊपर कृपा है तब तो पढ़ाता है। बाबा जो पढ़ाई पढ़ाता है उसको अमल में लाना यह हमारा काम है। अमल में लाने वाले के ऊपर बाबा की कृपा है। वह सदा सुखी रहता है, सुख देने बिगर रह नहीं सकता। संकल्प में भी, स्वप्न में भी यह है कि सबको सुख मिले। कौन-सा सुख मिले? दुखहर्त्ता, सुखदाता बाबा ने दुख को खत्म करने का जो सुख दिया है, वो सबको महसूस हो। इतना अंदर सुख हो जो दुखियों का दुख दूर हो जाये। तो हे आत्मा, अपने आपको देख। पास्ट इज़ पास्ट। पास्ट में जो हुआ था, वाणी, कर्म, संकल्प, चेहरे-चलन से, वह फिर से न हो। ❖

गॉडलीवुड स्टूडियो के निर्माण की योजना

• ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुंबई)

यह तो हम सब जानते हैं कि सृष्टि रूपी नाटक में चार प्रमुख युग हैं और पाँचवां बहुत ही थोड़े समय का है संगमयुग जिसमें हमें शिवबाबा का परिचय देने तथा अपना भाग्य बनाने का मौका मिलता है।

शिवबाबा ने हम बच्चों को श्रीमत दी है कि जितना जल्दी हो सके, सबको संदेश दें कि परमात्मा बाप आया है ताकि संदेश प्राप्त आत्मायें श्रेष्ठ प्रालब्ध बनाने के पुरुषार्थ में जुट जायें क्योंकि अगर एकदम अंत समय पर यह परिचय उन्हें मिलेगा तो पुरुषार्थ करने का समय ही नहीं मिल पायेगा और जितनी प्राप्ति होनी चाहिए, उतनी नहीं हो पायेगी।

इस संदर्भ में ईश्वरीय सेवा की अनेक प्रकार की योजनायें निर्माण हो रही हैं। विशेष टीवी के माध्यम से बहुत कम समय में और त्वरित गति से सबको संदेश मिल सकता है। टीवी के माध्यम से तीव्र गति से सेवा का पहला अनुभव मुझे और बी.के.ऊषा को सन् 1974 में हुआ। तब हम लैगास गये हुए थे। वहाँ हफ्ते में एक दिन, शहर में वी.आई.पीज का कार्यक्रम होता है जिसे टीवी के माध्यम से नाइजीरिया के 2 से 2.5 करोड़ लोग देखते हैं। इसी कार्यक्रम के बीच शिवबाबा का परिचय और संदेश देने का 20 मिनट का अवसर मिला। इसी प्रकार वेदांती बहन जब ईश्वरीय सेवार्थ मॉरिशियस में थी तो प्रदर्शनी करने के लिए हॉल ढूँढ़ते-ढूँढ़ते विष्णु हॉल में पहुँची। वहाँ रामकथा के समाप्ति समारोह का टीवी के द्वारा लाइव प्रसारण हो रहा था जिसे सारा देश देख रहा था। जैसे ही वेदांती बहन हॉल में दाखिल हुई, कथा के मुख्य पुरोहित ने कहा, आइये ब्रह्माकुमारी बहन, इस पूर्णाहुति कार्यक्रम में अपनी संस्था का परिचय दीजिए ताकि मॉरिशियस में सबको संस्था के बारे में पता चल जाये। इस प्रकार से हमारा अनुभव है कि टीवी के द्वारा बहुत कम समय में ही सारे देश को परिचय देने का कार्य हो सकता है।

दिल्ली में भी रवि भाई तथा साथियों ने ओमशान्ति स्टूडियो का निर्माण किया और हम देख रहे हैं कि आस्था, संस्कार, जागरण आदि चैनलों पर प्रसारित कार्यक्रमों से बहुत सेवायें हो रही हैं।

पिछले वर्ष की वार्षिक मीटिंग में भाई-बहनों से जानकारी प्राप्त हुई कि 95% सेवाकेन्द्रों पर टीवी पर मिले संदेश द्वारा, आने वाले जिज्ञासुओं की संख्या बढ़ी है।

आदरणीय निर्वैर भाई ने भी क्लास में उपस्थित भाई-बहनों से पूछा कि पहली बारी आने वालों में से टीवी के माध्यम से संदेश प्राप्त कर आने वाले कितने हैं तो मालूम चला कि 65% भाई-बहनों को टीवी के माध्यम द्वारा परमात्मा का परिचय प्राप्त हुआ था।

वर्तमान समय टीवी पर करीब 12 भाषाओं में परमात्मा का दिव्य परिचय देने के कार्यक्रम चल रहे हैं और करीब 1.5 करोड़ लोग प्रतिदिन शिवबाबा का ज्ञान इस माध्यम से प्राप्त कर रहे हैं। पहले यही भाई-बहनें ब्रह्माकुमारी शब्द सुनते ही दूर रहने का प्रयत्न करते थे अब वही शिवबाबा के ज्ञान को सुनने के लिए तरसते हैं।

टीवी के माध्यम से ईश्वरीय सेवायें कैसे बढ़ें, इस संबंध में यज्ञ की प्रबंध समिति (Management Committee) की मीटिंग हुई और अप्रैल, 2010 में यह नक्की हुआ कि मनमोहिनी कॉम्पलेक्स के प्रवेश द्वार के नज़दीक बाँयी तरफ जो प्लॉट खाली है, उस पर एक स्टूडियो बनाया जाये। सभी दादियों तथा बड़े भाइयों ने मिलकर वहाँ पर भूमि

शुद्धिकरण का कार्यक्रम किया।

इस लेख द्वारा निर्माणाधीन स्टूडियो का परिचय देना चाहता हूँ। कई बार प्रश्न होता है कि नाम में क्या रखा है लेकिन हम सबका अनुभव यही है कि नाम के द्वारा कार्य सिद्ध होता ही है इसलिए शिवबाबा ने अपने मुख्यालय के भवनों के नाम पांडव भवन, ज्ञान सरोवर, शान्तिवन ऐसे चुनकर रखे हैं। इसी प्रकार से इस स्टूडियो का नाम भी शिवबाबा से श्रीमत लेकर Godlywood Studio रखा गया है। कारण यही है कि लोग इस प्रकार के नाम से परिचित हैं जैसे अमेरिका में लास एंजिल्स में Hollywood Studio है जहाँ अंग्रेजी आदि भाषाओं में फिल्में बनती हैं और मुंबई में Bollywood Studio है जहाँ हर वर्ष 500 से अधिक नई फिल्मों का निर्माण होता है। इसी कारण प्यारे शिवबाबा का परिचय देने के लिए निर्मित होने वाले इस स्टूडियो का नाम Godlywood Studio रखा गया है।

दादी प्रकाशमणि सिनेमा के लिए कहती थी, सिन (Sin) की मां अर्थात् पाप की जननी और इसलिए सबसे अनुरोध करती थी कि सिनेमा आदि देखने में अपना समय बर्बाद न करें। अब इस प्रकार की भूमिका वाली फिल्मों की दुनिया के अंदर हम परिवर्तन करना चाहते हैं ताकि यही सिनेमा पाप की माँ बनने के बजाय पुण्य की माँ बन जाए और लाखों सिनेमाघरों द्वारा सबको जीवन को श्रेष्ठ बनाने का संदेश मिल जाये। सिनेमा के क्षेत्र में एक दिव्य क्रांति लाने के लिए इस स्टूडियो का निर्माण हो रहा है। इस स्टूडियो का निर्माण 25,000 स्कवायर फुट के क्षेत्र में किया जायेगा। ग्राउंड फ्लोर में दो तथा फर्स्ट फ्लोर में एक, इस प्रकार तीन शूटिंग एवं रिकॉर्डिंग स्टूडियो होंगे। दूसरी, तीसरी और चौथी मंजिल पर रिकॉर्ड किये गये कार्यक्रमों को अंतिम रूप देने के लिए एडिटिंग, मिक्सिंग आदि विभाग होंगे जिनके द्वारा फाइनल किये गये कार्यक्रमों को देश भर के टीवी चैनलों पर प्रसारित करने के लिए भेजा जायेगा।

इस स्टूडियो में इंटरव्यू, डायलॉग, डॉक्यूमेन्ट्री, टॉक शॉ, टेलीफिल्म, नृत्य नाटिकाओं आदि का निर्माण होगा और लक्ष्य यही रखा गया है कि अभी जो 1.5 करोड़ लोग प्रतिदिन टीवी के माध्यम से संदेश प्राप्त करते हैं, वह संख्या बढ़कर 15 करोड़ तक पहुँच जाए।

इस भवन का छायाचित्र इसी ज्ञानामृत पत्रिका के मुखपृष्ठ पर छापा गया है, उसे देखिए और इसी लेख में दिये गये ग्राउंड फ्लोर तथा फर्स्ट फ्लोर पर निर्माण होने वाले रिकॉर्डिंग स्टूडियो का प्लान भी देखिए। ग्राउंड फ्लोर के स्टूडियो की ऊँचाई 15 फुट रहेगी और फर्स्ट फ्लोर के स्टूडियो की ऊँचाई 20 फुट रहेगी और दोनों फ्लोर पर साइड में Mezzanine Floor बनेगा ताकि रिकॉर्डिंग करने वाले लोगों को अच्छी तरह से अपना कार्य करने की सुविधा मिल सके।

इस स्टूडियो के निर्माण में विशेष प्रकार के कांच के ग्लास का उपयोग किया जायेगा जिसके लिए एक भाई ने हँसते-हँसते कहा कि यह यज्ञ का पहला ग्लास हाऊस बनेगा। शांतिवन और मधुबन परिसर में हमारे कई ऐसे अनुभवी भाई-बहनें हैं जो गुप्त रूप में डायमंड समान कार्य कर रहे हैं और टेलीफिल्म, एनीमेशन फिल्म आदि बनाने में अनेक प्रकार के प्रयोग कर रहे हैं। ये सभी महारथी भाई-बहनें अलग-अलग स्थानों पर बैठकर अपना-अपना कार्य करते हैं, अब इन्हें एक ही स्थान पर बैठकर अपना कार्य करने की सुविधा मिलेगी।

गॉडलीवुड स्टूडियो के निर्माण के लिए भूमि शुद्धिकरण का

Godlywood Studio

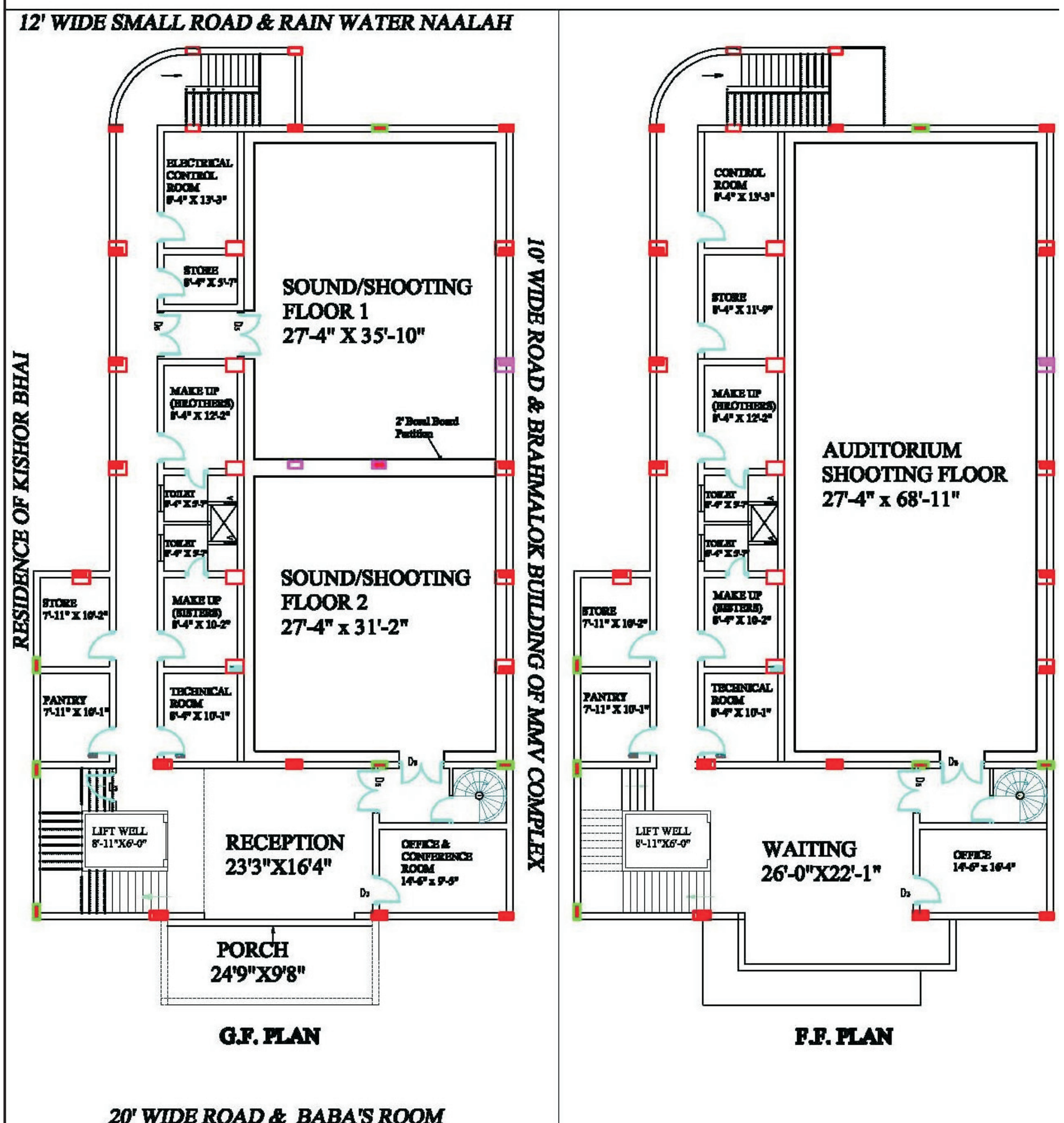

कार्यक्रम हो गया था, इसी बीच ब्रह्माकुमारी ऊषा जी, जो हमारे आर्ट एण्ड कल्चर विंग की उपाध्यक्षा थी, ने 23 सितंबर 2010 को अपना शरीर छोड़ा। उनके पार्थिव शरीर के अग्नि संस्कार के बाद पहला-पहला भोग जब लगाया गया तब शिवबाबा ने ऊषा जी की एक आश बताई। ऊषा जी ने बाबा को यही कहा कि अभी तो मेरा शरीर छूट गया है, इसलिए मैं आगे ईश्वरीय सेवा नहीं कर पाऊँगी और मेरा पुण्य का खाता बंद हो जायेगा। अगले शरीर में जब मैं बड़ी होऊँगी तभी मैं ईश्वरीय सेवा कर सकूँगी

इसलिए मेरी याद में ऐसा कोई ईश्वरीय सेवा का कार्यक्रम बने जिसके फलस्वरूप मेरा पुण्य का खाता बढ़ता रहे और मुझे कुछ न कुछ प्राप्ति होती रहे।

शिवबाबा के इस संदेश के प्रति मुंबई गामदेवी सबज़ोन के बहन-भाइयों ने काफी विचार किया और फिर 12 दिसंबर, 2010 को मीटिंग में उन्होंने यही नक्की किया कि यज्ञ के द्वारा Godlywood Studio का निर्माण हो ही रहा है तो क्यों न इसे ही अपनाया जाये और गामदेवी सबज़ोन के सभी बहन-भाई, ऊषा बहन के लौकिक रिश्तेदार तथा जिन आत्माओं को ऊषा बहन द्वारा शिवबाबा का परिचय प्राप्त हुआ है और जिनके साथ उनका बहुत घनिष्ठ संबंध रहा है, ऐसे सब भाई-बहनें मिलजुलकर जितना हो सके, उतना अपना धन इस कार्य के लिए seed money के रूप में सफल करें। इससे गामदेवी सबज़ोन के सभी बहन-भाइयों को यह तसल्ली होगी कि हमें जो पालना ऊषा बहन द्वारा मिली थी, उसके एवज में उनकी आशा पूर्ण करने हेतु हमने अपनी उंगली दी है। दिसंबर 14 को गामदेवी सबज़ोन की दो मुख्य प्रतिनिधि बहनें आदरणीया दादी जानकी जी से मिलीं और इस प्रकार से seed money के रूप में धन देने की अपनी इच्छा प्रकट की। दादी जी ने गुलज़ार दादी को यह संदेश बापदादा को देने के लिए कहा। दिसंबर 15, 2010 की अव्यक्त वाणी के बाद जब मैंने बापदादा को गुलदस्ता भेंट किया तो शिवबाबा ने जो श्रीमत बताई वो तो आप सब जानते ही हैं। बाबा ने कहा, यह जो आपने प्लैन बनाया है, वह बाबा को पसंद है और आप अपने कार्य को आगे बढ़ा सकते हो। इस प्रकार इस Godlywood Studio के निर्माण के साथ सूक्ष्म रूप में ऊषा बहन की इच्छापूर्ति का कार्य भी हो जायेगा।

आगे चलकर इस स्टूडियो के द्वारा बहुत नये-नये कार्यक्रम बनेंगे और अभी थोड़े समय में Peace of Mind नाम का टीवी चैनल भी यज्ञ द्वारा शुरू होने वाला है जिसके द्वारा स्टूडियो में बने कार्यक्रमों को प्रसारित करने में मदद मिलेगी तथा भारत के अन्य टीवी चैनल्स को भी यहाँ पर बने हुए कार्यक्रम हम दे सकेंगे। इस प्रकार खाना बनाने के कीचन का काम स्टूडियो करेगा और उसे परोसने का काम अपने टीवी चैनल द्वारा होगा।

स्टूडियो के अलावा अन्य कहीं पर भी कोई कार्यक्रम होंगे तो उन्हें भी Peace of Mind Channel के साथ Uplink करके सारी दुनिया में प्रसारित करने का कारोबार होगा। इसी प्रकार से हम चाहते हैं कि स्टूडियो द्वारा समाचारों का भी सीधा प्रसारण करें ताकि जो भी ईश्वरीय सेवा की प्रवृत्तियाँ भारत के विभिन्न स्थानों पर होती हैं, उनका समाचार सभी को तुरंत मिल सके और वे उस समाचार को अपने शहर के विभिन्न समाचारपत्रों में प्रकाशित करा सकें। इसी तरह से और भी अनेक प्रकार के कार्यक्रम होंगे जिनके बारे में आगे चलकर सूचना दी जायेगी।

प्रस्तुत लेख लिखने का यह भी लक्ष्य है कि दैवी परिवार में देश-विदेश में कई बहन-भाई इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के क्षेत्र में बहुत अनुभवी हैं, उनके पास इस प्रोजेक्ट के बारे में नये विचार हों तो वे हमें दे सकते हैं ताकि स्टूडियो निर्माण के समय हम इन सब विचारधाराओं को शामिल कर एक आदर्श स्टूडियो का निर्माण कर सकें।

यह सारा ही काम वर्ल्ड रिन्युअल स्प्रीच्युअल ट्रस्ट की तरफ से हो रहा है। किसी भी प्रकार के सहयोग के लिए वर्ल्ड रिन्युअल स्प्रीच्युअल ट्रस्ट, मुंबई ऑफिस से संपर्क कर सकते हैं। ❖

‘पत्र’ संपादक के नाम

ज्ञानामृत पत्रिका निश्चित ही ज्ञान का सागर है और प्रत्येक लेख इस सागर की अमृत बूंदें हैं जो मन को शीतलता एवं संकल्पों को श्रेष्ठता प्रदान करती हैं। अगस्त अंक में ‘ब्रह्मचर्यम् परम् बलम्’ लेख विशेषकर अत्यंत प्रेरणादायक, मानव जीवन की वास्तविकता एवं यथार्थ स्थिति को प्रदर्शित करता, नेत्रों को खोलने वाला था। यह सत्य है कि अच्छे चरित्र से ही अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण होता है और इस निर्माण में जिस संजीवनी की आवश्यकता होती है, उसका नाम ब्रह्मचर्य ही है। वेदों और पुराणों में तो ब्रह्मचर्य की शक्ति और महिमा को विशेष स्थान दिया गया है। अन्य लेख ‘बचिये व्यर्थ विचारों से’ एवं ‘सहज जीवन’ भी अत्यंत प्रेरणादायक लगे। दोनों ही लेखों में मानव जीवन को सरल, सुन्दर व श्रेष्ठ बनाने के सूत्र निहित हैं। ज्ञानामृत की अमृत धारा जनमानस को सदैव यूं ही कृतार्थ करती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ..

– गौरव त्यागी,
पनकी (कानपुर)

अगस्त 2010 अंक में प्रकाशित ‘सहज जीवन’ अनुकरणीय लगा। इसमें मानव को व्यवहारिक एवं मधुर जीवन जीने के मूलमंत्र बताये गये हैं जैसे, ‘विशेषतायें देखिये, दोष नहीं’, ‘संघर्षों का मूल है स्वार्थ’, ‘विनम्रता बनाती है ईश्वरीय कृपा का पात्र’ आदि। अगर व्यक्ति इनको जीवन में उतारे तो जीवन सहज, शान्त एवं सार्थक बन जाता है। कहा गया है, जिनके मन में ईश्वर के प्रति जितनी श्रद्धा-आस्था होगी, जीवन उतना ही सहज एवं शान्त रहेगा।

– झूमर लाल राठी, जोधपुर

ज्ञानामृत पत्रिका के लेखों द्वारा नवजीवन प्राप्त होता है। जैसे मूर्तिकार एक टेढ़े-मेढ़े पत्थर को एक सुन्दर मूर्ति का रूप दे देता है वैसे ही ज्ञानामृत पत्रिका मुझ कौड़ी तुल्य आत्मा को हीरे तुल्य बना रही है। ‘मानव और पेड़’, ‘राजयोग द्वारा वृत्ति परिवर्तन’, ‘कर्मों की गहन गति’ लेख बेहद पसंद आये। इन लेखों ने आत्मा में विशेष जागृति पैदा कर दी। कई लेखों को बार-बार पढ़ता हूँ फिर भी मन थकता नहीं। ज्ञानामृत पत्रिका चारों ओर सूर्य की भाँति रोशनी फैलाती है।

– ब्र.कु. नन्दकिशोर,
ज्योतिनगर (हरदोई)

अगस्त 2010 अंक के सभी लेख सकारात्मक प्रेरणा देने वाले हैं। ‘जन्मदिन की सौगात’ लेख में बाबा ने एक क्रोधी एवं व्यसनयुक्त आत्मा पर अमृत वर्षा कर उसके दुख, क्रोध, व्यसन दूर कर दिए। ‘मैं कहता हूँ आँखों देखी’ में लेखक द्वारा मधुबन का जो वर्णन किया गया है उससे लगता है कि हर आत्मा को एक बार मधुबन ज़रूर जाना चाहिए। कुछ लेख डिप्रेशन दूर करने पर थे। मानव जीवन से जुड़े हर पहलू पर हमें ज्ञानामृत में जवाब मिल जाता है।

– सन्तोष सूर्यवंशी,
धार (म.प्र.)

सितंबर 2010 अंक में ‘संजय की कलम से’ स्तंभ में ‘श्रीकृष्ण का जन्म और जीवन पूर्ण पवित्र था’ लेख पढ़ा। गायन योग्य और पूजन योग्य जीवन में अंतर का स्पष्ट ज्ञान मिला। पवित्रता का कितना मूल्य है, समझ मिली। ज्ञानामृत के हर अंक में ज्ञान का नया-नया भोजन मिलता है जिससे उमंग-उत्साह बढ़ता है। संपादक और लेखकों को कोटि-कोटि वंदन!

– ब्र.कु. ईश्वर पटेल, ऊंझा

सितंबर अंक के दो लेख बहुत-बहुत पसंद आये – ‘दोस्त हो तो ऐसा – खुदा दोस्त जैसा’ और ‘संगठन की मज़बूती’। ज्ञानामृत के लेखक मुर्दों में भी जान डाल देते हैं। सच्चा दोस्त शिवबाबा और ज्ञानामृत हैं जो बेचैन दिल में चैन भर देते हैं।

– डॉ.हेमंत कुमार, अकोला

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष..

माता के साथ गुरु भी बनिए

• ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

प्राचीन काल में माँ मदालसा नाम की बहुत प्रसिद्ध महिला हुई हैं। वे जन्म से ही अपने बच्चों को लोरी देती थी – 'शुद्धो असि, बुद्धोअसि, निरंजनोअसि, संसार माया परिवर्जितोअसि ...' अर्थात् हे पुत्र तू शुद्ध है, बुद्ध है, निरंजन है, संसार की माया (बुराई) से रहित है। वे अपने बालक में ज्ञान के ऐसे संस्कार डाल देती थी कि बड़ा होकर वह महान, तेजस्वी संन्यासी बनता था। वे यह मानती थी कि पुत्रों रूपी आत्माओं को मेरी कोख, धरती पर उतारने के निमित्त बनी है तो अब भवबंधन से इन्हें मुक्त करना भी मेरा कर्त्तव्य है। जन्म देकर संसार में इन्हें फँसा दिया और फँसा ही छोड़ दिया तो मैंने गुरु का कर्त्तव्य तो किया ही नहीं। माँ के नाते धरती पर उतारना यदि मेरा फ़र्ज़ है तो फिर गुरु बनकर, संसार में रहते संसार के बंधनों से मुक्ति का मार्ग दिखाना भी मुझ माँ का ही फ़र्ज़ है।

एक महिला गोष्ठी में माँ मदालसा का उपरोक्त उदाहरण देते हुए हमने कहा, क्या ही अच्छा हो, यदि आज की माताएँ-बहनें भी बाल्यकाल से ही बच्चे में इस प्रकार के संस्कार डालें। एक बहन ने तुरंत पूछा, बहन जी, जब व्यक्ति संसार में आ ही गया तो अब उसे यहीं रहने दिया जाये ना, उसका वापस जाना या वापस जाने की बात सोचना क्यों जरूरी है?

संसार की हर क्रिया, विरोधी क्रिया से जुड़ी है

हमने कहा, संसार की हर क्रिया, एक विरोधी क्रिया से जुड़ी हुई है। हम श्वास लेते हैं पर लेना जितना ज़रूरी है, छोड़ना भी उतना ही जरूरी है। हम बिस्तर फैलाते हैं, सोते हैं पर उठना और फैले बिस्तर को समेटना भी हमारी रोज़ की चर्या में शामिल है। हम धन संग्रह करते हैं पर संग्रह जितना ज़रूरी है, धन का विसर्जन भी उतना ही आवश्यक है। संपत्ति ईश्वर की होती है, उसे मेरा मानने से समस्यायें खड़ी होती हैं। मुख खोलते हैं फिर बंद भी करते हैं; आँखों से देखते हैं फिर बंद भी होती हैं; पाँवों से चलते हैं फिर इन्हें रोक भी लेते हैं। सर्दी लगती है तो भारी कपड़े पहनते हैं पर फिर उतार भी देते हैं। इसी का नाम जीवन का प्रवाह है। जैसे शरीर की क्रियाओं का फैलना-सिकुड़ना शारीरिक जीवन के लिए अनिवार्य है उसी प्रकार आत्मा जब चाहे शरीर की स्मृति में आकर कर्म और फ़र्ज़ निभाए और जब चाहे शरीर की स्मृति से न्यारी होकर आत्मा बनकर अपने स्वरूप में खो जाए या वापस अपने परमधाम में उड़ जाए। यह अभ्यास आत्मिक स्वास्थ्य और आत्मिक उन्नति के लिए बहुत जरूरी है।

जरूरी है देह में आने और देह से जाने का अभ्यास

यदि हम एक क्रिया करें अर्थात् श्वास लें, छोड़े नहीं; बिस्तर फैलायें, समेटे नहीं; निद्रा के आगोश में जाएँ, उठे नहीं तो जीवन कैसा होगा, जीवन रहेगा ही नहीं। इसी प्रकार आत्मायें भी शरीरों को धारण करें पर उन्हें उतारें नहीं और सृष्टि-मंच पर पार्ट बजाने तो आएँ पर वापस लौटें नहीं तो सृष्टि का दृश्य कैसा होगा? हर रोज़ की दिनचर्या में भी यदि चौबीसों घंटे शरीर के भान में रहें, इसे एक पल भी ना भूलें, इसकी स्मृति को लटकाए-लटकाए हर कर्म करें तो जीवन भार-स्वरूप अनुभव होने लगता है। जैसे बढ़िया से बढ़िया जूता भी यदि चौबीसों घंटे, सुषुप्त या जाग्रत – सभी अवस्थाओं में पैर में पड़ा रहे तो पैर के नुकसान की पूरी संभावना है।

सुरक्षा करने वाला जूता ही पाँव के लिए असुरक्षाकारी बन जाता है। **इसी प्रकार आत्मा की सुविधा के लिए निर्मित यह शरीर, धर्म की साधना के लिए साधन रूप में प्राप्त यह शरीर सोते-जागते, हर समय आत्मा पर हावी रहे, एक मिनट भी आत्मा इसकी स्मृति से मुक्त न हो सके तो यह सेवक, सेवक न रहकर तानाशाह मालिक जैसा बनकर उसके सुख-चैन और स्वतंत्रता का हनन कर लेता है।** इसलिए प्रतिदिन के कार्य-व्यवहार के बीच-बीच में भी यह स्मृति चाहिए कि मैं आत्मा इस देह में मेहमान हूँ, मुझे जाना है और जाने की प्रैक्टिस भी करनी चाहिए। देह छोड़कर फाइनल इस रंगमंच से जाना ही है, यह स्मृति तो और भी पक्की चाहिए।

अति आवश्यक है ईश्वर-चर्चा

जैसी स्मृति होती है वैसी स्थिति बनती है। श्रेष्ठ स्मृति से ही श्रेष्ठ स्थिति बनती है। सबसे श्रेष्ठ स्मृति है परमात्मा की, जो स्वयं को देह से न्यारी आत्मा रूप में अनुभव करने से ही निरंतर बनी रह सकती है। परमात्मा की स्मृति होगी तो चिन्तन भी उनका ही होगा, नहीं तो हम सांसारिक चर्चाएँ करेंगे, फिर सांसारिक विश्वास निर्मित करेंगे, फिर विश्वासों से मेल खाता समुदाय बनाएंगे, अन्य समुदायों के प्रति दुराग्रह पैदा करेंगे, दुराग्रह से विग्रह और अलगाव पैदा होंगे। अलगाव हिंसा को जन्म देगा और हिंसा विनाश की ओर ले जाएगी। इसलिए आवश्यक है कि हम कार्य-व्यवहार में रहते स्व-स्मृति और ईश्वरीय स्मृति में रहें, ईश्वर की चर्चा करें, उनके गुणों का चिन्तन करें। ईश्वर हमारा पिता है, हम सब उसके हैं, सारा विश्व उन्हीं का बड़ा परिवार है, वे सबसे प्यार करते हैं, हम सब उनके बच्चे आपस में भाई-भाई हैं, इस प्रकार ईश्वर की चर्चा करेंगे तो हम सात्विक बनेंगे, हदें टूटेंगी और हमें देख पूरा समाज सात्विक बनेगा।

गुरु बनकर डालिए त्याग, वैराग्य और ज्ञान के बीज

माँ मदालसा ने बच्चे को संसार में लाने का कार्य भी किया और संसार में रहते, संसार के बंधनों से मुक्त करने का भी तभी वह महान माँ कहलाई, वंदनीय और पूजनीय बनी। लोग कहते हैं, माँ हो तो मदालसा जैसी। उसके बच्चों के लिए वह माँ के साथ-साथ सच्ची गुरु भी सिद्ध हुई। उसने माँ बनके जन्म दिया, गुरु बनकर निर्बन्धन बनाया।

आज की नारी भी अपने दोनों कर्त्तव्यों का साथ-साथ निर्वहन करे। यदि केवल माँ का कर्त्तव्य करती है और गुरु बनकर बच्चे में त्याग, वैराग्य और ज्ञान के बीज नहीं डालती तो बच्चा संसार सागर की लहरों में उलझ जाता है। उलझनों से भरा बच्चा जीवन देने वाले के प्रति कृतज्ञ नहीं रह पाता। पिछले दिनों एक समाचार आया था कि एक बच्चे ने अपने माता-पिता पर केस कर दिया, कारण यह बताया कि मैं अपने जीवन में बहुत दुखी हूँ, इस दुख का कारण मेरे माता-पिता हैं, ना वो मुझे जन्म देते, ना मैं दुखी होता।

विचार कीजिये, शरीर जैसा कीमती तोहफा देने वाले के प्रति ऐसी वितृष्णा क्यों? क्योंकि शरीर दिया पर उसका सदुपयोग नहीं सिखाया। **टांगें दी पर चलने की दिशा नहीं दिखाई, आँखें दी पर पवित्र नज़रों से देखना नहीं सिखाया। मुख दिया पर इससे ज्ञान बरसाने का ज्ञान नहीं दिया। इस कारण कीमती शरीर बोझ बन गया और शरीर देने वाले परोपकारी के बजाय अपकारी नज़र आने लगे।**

गुरु बनने के लिए गुण चाहिएँ

एक बार एक माता के दो बच्चे बिस्कुट के एक पैकेट पर झगड़ रहे थे। पैकेट फट गया था, कुछ बिस्कुट टूट कर फर्श पर बिखरे पड़े थे। छोटा बच्चा पसरकर रो रहा था। माता ने कहा, देखिए बहन जी, एक पैकेट पर कैसे लड़ रहे हैं! हमने कहा, अरे, आप तो गुरु हैं, गुरु के बैठे होते कभी शिष्य झगड़ने की

हिम्मत करते हैं क्या? आप कोई लकड़ी की मूर्ति तो हैं नहीं, ना ही कागज़ का पुतला। आप पैकेट लेकर पाँच एक को और पाँच दूसरे को दो, दोनों राजी हो जायेंगे। उसने कहा, मैंने ऐसा ही किया था पर फिर बड़े ने कहा, मैं बड़ा हूँ, मुझे एक ज़्यादा दो। मैंने पूछा, बड़े का हक ज़्यादा होता है, यह इसने कहाँ से सीखा? यदि हम बड़े लोग अपना बड़प्पन दिखाते हुए छोटों की भेंट में ज़्यादा हक माँगते होंगे तो हमारे बच्चे भी स्वत: अनुसरण करेंगे। नहीं तो नियम तो यह कहता है कि बड़ा वो, जो दे, न कि ले। बड़ा इसलिए बड़ा है क्योंकि वह छोटों को देता है फिर चाहे प्यार दे या वस्तु दे। परंतु यदि वह लेना चाहता है तो वह उसी वक्त छोटा हो जाता है। अत: गुरु बनने के लिए गुण चाहिएँ। गुरु अर्थात् बड़ा और लघु अर्थात् छोटा। लेने से हम लघु बन जाते हैं।

क्या इतनी बड़ी बातें बच्चे नहीं समझते?

किसी ने कहा, यह तो उनका बचपन है। इतनी त्याग, दान, बड़ेपन की बातें वो क्या समझें? परन्तु आधुनिक बच्चे तो इनसे भी बड़ी-बड़ी बातें समझते हैं। जब वे काम, क्रोध, हिंसा, लोभ की बड़ी-बड़ी बातें समझ सकते हैं तो गुणों की इन छोटी-छोटी बातों को समझना क्या मुश्किल है! **अत: नारी माता के रूप में प्यार दे और गुरु रूप में गुण भी सिखाये तो प्रेम और शक्ति दोनों का संतुलन हो जायेगा। मंदिर की देवी भक्तों को दोनों रूपों का साक्षात्कार कराती है। उसके नेत्रों से प्रेम भी बरसता है पर साथ-साथ शक्ति भी। दोनों का संतुलन होने से ही वह भक्तों का उद्धार करती है। नारी भी देवी है, दोनों गुणों का संतुलन रखेगी तभी संतान का उद्धार कर पायेगी।** फिर उसे कभी यह शिकायत नहीं रहेगी कि बच्चे कृतज्ञ नहीं हैं। कृतज्ञ तो क्या, ऐसी दिव्य माता पर तो वो कुर्बान जाएंगे। ❖

सच्चे दिल पर साहब राजी

आमतौर पर हम झूठ बोलने को पाप नहीं समझते लेकिन ये भूल जाते हैं कि ये पाप हमारे पुरुषार्थ में बाधक बनते हैं। सच्चे दिल वाला मनुष्य अनेक भूलें करते हुए भी भगवान के दिल में अपना स्थान बनाये रखता है। सच्चाई निर्भय बनाती है। कभी-कभी झूठ बोलने पर लगता है कि परिस्थिति टल गई या अपमानित होने से बच गये लेकिन ऐसा झूठ आत्मा के उमंग-उत्साह को कम करता है और योग में मन पश्चाताप के कारण बोझिल महसूस करता है। एक बार का बोला हुआ झूठ, सौ सच को नकार देता है फिर कोई उस पर विश्वास नहीं करता।

हम सच को छिपाने के लिए स्वयं को एक दलील देते हैं कि ईश्वर सब जानते हैं। उनसे कुछ भी छिपा हुआ नहीं है। लेकिन जब संगमयुग पर शिव परमात्मा बच्चों के लिए तन का आधार लेते हैं और अपने बारे में, सृष्टि-चक्र के बारे में व हमारे बारे में सब बताते हैं तो हमें भी अपने किये हुए विकर्मों को बाबा के सामने रखना अनिवार्य है। यही तो समय है जब सर्जन को हम अपनी कमी-कमजोरी बताकर स्वयं को शक्तिशाली बना सकते हैं।

जो दृढ़ता से सच्चाई को अपनाते हैं, उनकी कथनी और करनी एक हो जाती है। सच्चाई सरलता को साथ लाती है। 'ईश्वर सत्य है' कथन प्रसिद्ध है अर्थात् जब परमात्मा स्वयं सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का व स्वयं का रहस्यबोध कराते हैं तो झूठ का पर्दाफाश हो जाता है, फिर उस सत्य ईश्वर के हम बच्चे भी दृढ़ संकल्प करें कि कुछ भी हो जाए, झूठ का सहारा नहीं लेंगे, भले अपमान सहन करना पड़े। तभी तो सत्य पिता को बच्चे प्रत्यक्ष कर पायेंगे।

आज दुनिया प्रमाण मांगती है तो वह प्रमाण हम ही तो देंगे। परमात्मा शिव के ही तो महावाक्य हैं कि सच की नाव हिलेगी, डुलेगी लेकिन कभी डूब नहीं सकती। तो माया के इस झूठे शस्त्र का हम आज ही त्याग कर सच्चे राही बनने का दृढ़ संकल्प करें। ❖

मन जीते जगतजीत

• संगीता, सूरत

जीवन रूपी यात्रा के हरेक क्षेत्र में ऊँचाइयों तक पहुँचाने में अहम भूमिका निभाता है हमारा 'मन'। यदि संकल्प कमज़ोर, उत्साहीन, नकारात्मक हैं तो हमारी यात्रा का परिणाम भी वैसा ही होता है और हर तरफ असफलता ही दिखाई देती है। जीवन में, व्यवहार क्षेत्र में अनेक प्रकार की परिस्थितियाँ आती हैं – दु:ख-सुख, हार-जीत, निन्दा-स्तुति आदि। मन के किसी भी कोने में इन्हें स्वीकार कर लिया तो हम कभी भी मंज़िल की तरफ नहीं बढ़ सकते क्योंकि मन के हारे हार, मन के जीते जीत। हिम्मत, दृढ़ता, उमंग-उल्लास को हमेशा साथ रखने से मन रूपी मशीन चलती रहती है और मंज़िल तक पहुँचा ही देती है।

आत्मा स्वयं की मित्र भी है तो शत्रु भी

'मन' आत्मा की तीन शक्तियों मन, बुद्धि, संस्कार में से सबसे प्रबल है। यह वह चमत्कारी छड़ी है जिसे यदि नियंत्रित रूप से घुमाया जाए तो अनेक कार्य चुटकियों में सम्पन्न कर देती है। कई, मन की तुलना एक चंचल बच्चे से करते हैं, तो कई इसे बेकाबू घोड़ा कहते हैं। परन्तु हकीकत में मन तो हमारा दर्पण है जिसमें हम स्वयं को जो हैं, जैसे हैं, देख सकते हैं। मन तो जादुई चिराग के जिन्न की तरह है। जिस प्रकार जिन्न अपने मालिक को कहता है 'काम दो, नहीं तो खा जाऊंगा' और मालिक उसे सीढ़ी चढ़ने-उतरने के काम में लगा देता है। वैसे ही एक सेकेण्ड में हमारा मन अनेक विचारों में भ्रमण करने लग पड़ता है। किसी वस्तु को देखा नहीं और गया भ्रमण करने। पूरे दिन में हम अनेकानेक वस्तुएँ देखते, अनेक बातें सुनते और कहते हैं। तो सोचो, मन कितने न अनगिनत विचारों को उत्पन्न करके हमें निरन्तर उनमें व्यस्त रखता है। इस प्रकार हमारा मन हमें धमकी दिए बिना ही हमारी आन्तरिक शक्तियों को नष्ट कर रहा है। हमारी हरेक कर्मेन्द्री का राजा 'मन' है। कहा गया है – ''आत्मा स्वयं की मित्र भी है तो शत्रु भी।'' जब हम मन के गुलाम बन जाते हैं तो स्वयं के ही शत्रु बन जाते हैं। वर्तमान संसार में यही हो रहा है जिसके कारण इतना पापाचार और भ्रष्टाचार फैल चुका है। वास्तव में, जब हम इस सच्चाई से अवगत हो जाते हैं कि मैं आत्मा मालिक हूँ और मन, बुद्धि, संस्कार व सर्व कर्मेन्द्रियाँ मेरी गुलाम हैं तो हम स्वयं के ही मित्र बन जाते हैं।

श्रीमद्भगवत गीता में कहा है –

उद्धरेदात्मनात्मानं
नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव
रिपुरात्मनः।।

अर्थात् मनुष्य को चाहिए कि अपने मन की सहायता से अपना उद्धार करे और अपने को नीचे न गिरने दे। यह मन जीव का मित्र भी है तो शत्रु भी है।

मन ही बन्धन – मोक्ष का कारण

वर्तमान समय मानव अपने मन तथा इन्द्रियों से प्रभावित है। हमें मन को इस प्रकार से प्रशिक्षित करना चाहिए कि वह प्रकृति की तड़क-भड़क से आकृष्ट न हो। इन्द्रिय विषयों में आकृष्ट होकर आत्मा को पतित करना तो सर्वनाश का मार्ग है। अपने को एकरस रखने का सर्वोत्कृष्ट साधन यही है कि मन को सदैव प्यारे शिवबाबा की याद में मगन रखा जाए। अमृतबिन्दु उपनिषद् में कहा गया है –

मन एव मनुष्याणां कारणं
बन्धमोक्षयोः।
बन्धाय विषयासंगो मुक्त्यै
निर्विषयं मनः।।

''मन ही मनुष्य के बन्धन का और मोक्ष का भी कारण है। इन्द्रिय विषयों में लीन मन बन्धन का कारण है और विषयों से विरक्त मन मोक्ष का कारण है।'' अत: यदि हमें मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा चाहिए तो हम मन को निरन्तर बाबा की याद में, बाबा द्वारा उच्चारे गए महावाक्यों में,

बाबा द्वारा दिए गए वरदानों की स्मृति में लगाये रखें।

बेहद का वैराग्य और योगाभ्यास

क्या यह सहज है कि हम मन को व्यर्थ से, नकारात्मक विचारों से मुक्त रखें व निरन्तर सकारात्मक, श्रेष्ठ, पवित्र, शुद्ध विचारों के प्रवाह में बहने दें? प्रबल मन को यदि वश में करना है तो इसका एक ही उपाय है योगाभ्यास। परन्तु इसके लिए निरन्तर अभ्यास चाहिए। योगाभ्यास की प्रथम सीढ़ी है, मन को पूर्णतया शिव बाबा में लगाएँ। स्वयं का व शिव बाबा का गुणगान करें व उसमें स्थित हो जाएँ। तभी मन को विचलित करने वाली बातें अशेष हो पाएँगी। निरन्तर अभ्यास और बेहद की वैराग्य वृत्ति द्वारा यह सम्भव हो जाएगा। बाबा को विभिन्न सम्बन्धों में याद करना, उनसे रूह-रिहान करना, विभिन्न स्वरूपों को याद करना, एकान्तवासी बन अपने आप से बातें करना, ज्ञान का चिन्तन-मन्थन करना – यह है मन को समस्त प्रकार की दुश्चिन्ताओं से मुक्त करने की परम शक्तिशाली एवं दिव्य विधि। जितना-जितना हम इन विधियों द्वारा योगाभ्यास में लगेंगे उतना ही हमारा मन उन वस्तुओं के प्रति अनासक्त होगा जो हमें बाबा से दूर ले जाती हैं और हम सुगमतापूर्वक बेहद के वैराग्य की ओर अग्रसर हो पायेंगे।

हिम्मते बच्चे मददे खुदा

दृढ़ संकल्प के लिए हमें गौरैया का आदर्श ग्रहण करना चाहिए जिसकी कहानी इस प्रकार है –

एक गौरैया ने समुद्र तट पर अंडे दिए किन्तु विशाल समुद्र उन्हें अपनी लहरों में समेट ले गया। गौरैया अत्यन्त क्षुब्ध हुई और उसने समुद्र से अण्डे लौटा देने के लिए कहा। समुद्र ने उसकी प्रार्थना पर कोई ध्यान नहीं दिया। गौरैया ने समुद्र को सुखा डालने की ठान ली। वह अपनी नन्हीं-सी चोंच से पानी उलीचने लगी। सभी उसके इस असम्भव संकल्प का उपहास करने लगे। उसके इस कार्य की सर्वत्र चर्चा चलने लगी। पक्षीराज गरुड़ ने जब यह बात सुनी तो उन्हें नन्हीं पक्षी बहन पर दया आई। वे गौरैया से मिलने आए तथा उसके निश्चय और दृढ़ संकल्प से बहुत प्रभावित हुए। गरुड़ ने समुद्र से कहा, गौरैया के अंडे लौटा दीजिए, नहीं तो मुझे स्वयं आगे आना पड़ेगा। इससे समुद्र भयभीत हुआ और उसने अंडे लौटा दिये। वह गौरैया गरुड़ की कृपा से सुखी हो गई।

माया रूपी समुद्र भी हमें अनेकानेक प्रलोभन रूपी लहरों की चपेट में लाने की कोशिश करता है किन्तु यदि हमारा संकल्प दृढ़ हो, बाबा द्वारा दिए गए सभी नियमों का पालन हम करते रहें और अपने लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करें तो बाबा निश्चित रूप से हमारी सहायता करेंगे। कहते हैं, जो अपनी सहायता आप करते हैं, भगवान उनकी सहायता अवश्य ही करते हैं। बाबा का वायदा है – 'हिम्मते बच्चे, मददे खुदा', 'एक कदम हिम्मत का हमारा तो हज़ार गुणा मदद बाबा की।'

अपने को निमित्त समझें

जो मन को तथा इन्द्रियों को वश में रखता है वह है स्वराज्य अधिकारी और जो मन के वशीभूत होता है वह अधिकारी के बदले गुलाम कहलाता है। अपनी हरेक इन्द्री को वश में लाने के लिए अपने को निमित्त समझकर हर कार्य करें। हर कर्म में सेवाभाव छिपा हो। हर श्वास में बाबा-बाबा निकले। हमेशा याद रखें कि करनकरावनहार तो स्वयं भगवान है, हम तो केवल निमित्त मात्र हैं। उसने हमें यह अलौकिक दिव्य जन्म दिया है। इसलिए हर संकल्प, हर कार्य करने के पहले देखें, क्या यह बाबा को पसन्द है? क्या यह परमात्म श्रीमत प्रमाण है? इस प्रकार इन विभिन्न विधियों द्वारा इन्द्रियों को पूर्ण वश में ला सकते हैं और यही योगाभ्यास की परम सिद्धि है। हम अपने मन को वश में करके स्वराज्य अधिकारी सो विश्व राज्य अधिकारी बन जाते हैं और मन की इस अद्‌भुत शक्ति से स्वयं का तथा समस्त विश्व का उद्धार कर सकते हैं। ❖

गतांक से आगे...

जीवन का स्वर्ण काल – युवा काल

• **ब्रह्माकुमारी सुमन**, अलीगंज (लखनऊ)

गतांक से प्रारंभ हुए इस लेख में युवाओं को सात बातों से बचने की शिक्षा दी गई है उनमें से कुसंग, व्यसन और आधुनिकता का वर्णन पिछले लेख में किया जा चुका है, अब आगे पढ़िए...

4.खयाली ख्वाबः– खयाली ख्वाब को हम कोरी कल्पना भी कह सकते हैं। यथार्थ के धरातल पर वही सफल है जिसने प्लान प्रैक्टिकल में लाना सीखा है। ख्वाबों की उड़ानें क्षण भर में ही धराशायी हो जाती हैं। वर्तमान में जीना सीखें, भविष्य का भविष्य में देखें। जो सामने है, उसे अच्छे से अच्छा करना है। वर्तमान ही भविष्य की दिशा तय करता है। सिर्फ सोचने से कुछ नहीं होता। **तैयार मूर्तियाँ तो फुटपाथ पर या मूर्तिकार के घर में भी रखी होती हैं पर जब तक वे मंदिर में प्रस्थापित नहीं हो जातीं तब तक उनकी कीमत पत्थर के समान ही रहती है। मंदिर में प्रस्थापित होने पर ही उनकी पूजा होती है, देव-देवी की उपाधि से उन्हें विभूषित किया जाता है। ठीक इसी प्रकार जब तक योजना को दृढ़ता के साथ प्रैक्टिकल में लाने का पुरुषार्थ नहीं करते तब तक वह खयाली योजना सिर्फ खयाली सुख दे पायेगी। इसी में समय भी हाथ से निकल जायेगा।**

5. नकारात्मकताः– इसमें हम व्यर्थ को भी जोड़ देते हैं। **यदि व्यर्थ विचार उलझा हुआ रास्ता है तो नकारात्मक विचार उलटा रास्ता है। जाना पूर्व में है, चल रहे हैं पश्चिम में, फिर लक्ष्य कब मिलेगा, भगवान ही मालिक। व्यर्थ विचार अवरोध पैदा करता है, नकारात्मक विचार भटकने व लुढ़कने का पथ है जिस पर चलकर, की हुई प्राप्तियाँ भी खत्म हो जाती हैं।** व्यर्थ विचार स्पीड ब्रेकर हैं तो नेगेटिव विचार पथ को ही ब्रेक करने वाले हैं। जैसे शुद्ध दूध में एक चुटकी नमक डाल दें तो क्या होगा? नेगेटिविटी भी सफलता के मार्ग में दुश्मन की तरह है इसलिए हे सफलता के सितारो, तुम्हें इसके चंगुल से बचना होगा।

6. ईर्ष्याः– ईर्ष्या एक ऐसी आग है जो शरीर और मन को एक साथ जलाती है। मन की शक्तियों को खाक कर, अहं का धुआँ भर देती है जो सामने वाले को न सिर्फ मुँझाता है बल्कि जलाता भी है। **ईर्ष्यालु अपना फायदा नहीं देखता, सामने वाले का घाटा कितना हुआ, इसमें उसको दिली सुकून मिलता है। उसकी भावना रहती है, हम चाहे कैसे भी हों, सामने वाला हमसे अच्छा न हो जैसे कि बंदर, वह अपना घर तो बनाता ही नहीं पर अहंकारवश चिड़ियों का घर भी तोड़ डालता है।** गाय जब घास खाती है तो कुत्ते उसके आगे-आगे भौंकते हैं, उसे खाने नहीं देते जबकि घास कुत्तों के खाने की चीज़ नहीं है। ईर्ष्यालु का मकसद ईर्ष्या से शुरू होकर ईर्ष्या में ही खत्म हो जाता है। वह कभी भी सुख और शान्ति का अनुभव नहीं कर सकता। वह अपने साथ-साथ अनेकों का जीवन बर्बाद कर देता है।

7. मदः– रोब, जोश, ज़िद्द – ये सब इसी (मद) की निशानी हैं। यादगार शास्त्र रामायण में, रावण के

पास ज्ञान, बुद्धि, शक्ति, भक्ति सब कुछ पर्याप्त मात्रा में माना गया है पर अहम् के कारण ही असुर कहलाया। सबकी घृणा का पात्र बना और विनाश को प्राप्त हुआ। इसी प्रकार सारी शक्तियाँ, विशेषतायें व प्राप्तियाँ नष्ट करने का कारण यह मद ही बनता है। यह पहाड़ की चोटी से गिरने के समान है, जिसके बाद कहीं से भी सलामत नहीं बचते। मद का आधार लेकर व्यक्ति सफलता की बुलन्दियों को छूने की बजाय बदनामियों व बद्दुआओं की बुलंदियाँ अवश्य छू लेता है। छू क्या लेता है, काबिज ही हो जाता है। शराब का नशा तो थोड़े समय के बाद फिर भी उतर जाता है पर मद का नशा तो सदा चढ़ा ही रहता है व निरंतर बढ़ता ही जाता है। इस नशे से मन मलीन, बुद्धि पतित, स्वभाव चिड़चिड़ा, संस्कार कट्टर, वृत्ति दूषित, दृष्टि कलुषित, स्मृति कमज़ोर, भावना अशुभ, भाव कटु, बोल ज़हरीले और कर्म विकर्म बनते चले जाते हैं। ऐसे में हर व्यक्ति दूर-दूर रहने लगता है जिस कारण ऋषि भले बने हों पर दुर्वासा ऋषि के समान ही रहते हैं।

युवाओ, कुसंग से आत्मा की पवित्रता का ह्रास होता है। व्यसन से शक्ति का पतन, आधुनिकता से आनन्द नष्ट होता है। मद से ज्ञान खत्म होता है। ईर्ष्या से प्रेम, नकारात्मकता से शान्ति और खयाली ख्वाब हमारा सुख लूट ले जाते हैं। अब इन सातों को नष्ट करने के लिए परमात्मा द्वारा दिए सात तीरों का उपयोग करो तो विजय तुमसे दूर कभी नहीं जा सकती। सात तीर हैं –

1.कड़ी मेहनत – इसका कोई विकल्प नहीं है। मेहनत वाला कभी भी दास नहीं, उदास नहीं, भूखा नहीं, किसी के उपहास से नहीं डरता, कभी सिर झुकाकर नहीं चलता। हर मंज़िल का अधिकारी बनता है। इसलिए युवाओ, कभी भी कामचोर न बनो। कुछ बनने के लिए कड़ी मेहनत करनी ही होगी। चींटी कभी थकती नहीं। क्या इतने छोटे जीव जितनी भी अक्ल हमारे पास नहीं है?

2.सतत प्रयास – 'करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान, रसरी आवत जात है सिल पर पड़त निशान' – क्या तुमने नहीं सुना? कच्ची मिट्टी का घड़ा भी पक्के फर्श को घिस देता है बार-बार रखने से। इसलिए युवाओ, जब तक जीना है, अभ्यास जारी रखना है, हार हर बार कुछ नया सिखाती है। हार, हार नहीं बल्कि एक नया रास्ता ढूँढ़ने का अवसर है इसलिए कभी रुको नहीं, पीछे लौटने के रास्ते सारे बंद कर दो, तुम्हें सिर्फ आगे बढ़ना है।

3.अटूट हिम्मत – यह भगवान का वादा है, तुम एक भी कदम हिम्मत का बढ़ाओगे, वह सौ कदम आपको आगे बढ़ायेगा। इसलिए हिम्मत की डोर कभी भी टूटने न पाये। अगर हिम्मत नहीं तो मरने के पहले न जाने कितनी बार रोज़ मरते रहेंगे, ऐसा जीवन भी क्या जीवन है। क्या नचिकेता, प्रह्लाद की हिम्मत तुमने नहीं सुनी? क्रांतिकारियों की हिम्मत क्या तुमने कहीं नहीं पढ़ी? विवेकानन्द की हिम्मत की गाथा क्या तुमको नहीं पता? फिर तुम्हारे साथ तो सर्वशक्तिवान है, तुम्हें हिम्मत के साथ सदा सफलता को प्राप्त करना ही है।

4.आत्मचिन्तन – परचिन्तन पतन की जड़ है, यह भगवान ने कहा है। **आत्मावलोकन उतना ही जरूरी है जितना ज़रूरी एक्सीडेन्ट होने पर एक्सरे।** दूसरों के चिन्तन में समय बर्बाद कर उनकी कमियों को अपने मन में शरण देने के बजाय आत्मचिन्तन कर अपनी कमियों को दूर भगाना ही बुद्धिमानों की पहचान है। तुम्हें मक्खी नहीं, मधुमक्खी बनना है।

5.अनवरत साधना – संस्कार परिवर्तन करना पहाड़ हटाने से भी

मुश्किल कार्य है। इसके लिए चाहिए अनवरत व कठिन साधना। आधा कल्प के (2500 वर्षों के) विकारों के बंधनों को काटना व विकारी संस्कारों को मोड़ना आसान कार्य नहीं है पर प्रज्वलित अग्नि बड़े व कड़े लोहे को भी पिघलाकर पानी जैसा तरल बना देती है। ऋषि-मुनियों ने विकारों को जीतने के लिए अनेक उपाय किये पर सफल नहीं हुए क्योंकि विधि सही नहीं थी इसलिए सिद्धि की प्राप्ति नहीं हुई परंतु बाबा ने जो विधि बताई है, उस साधना में अनवरत लगना ही होगा। हर मुश्किल को पार करने का उपाय है अनवरत साधना।

6.सच्चा दिल – सच्चे दिल पर साहेब राजी। युवाओ, जिन्दगी में कुछ सीखो या न सीखो पर सच्चाई जरूर सीख लेना। सच्चे दिल वाला ही भगवान के दिल पर राज कर सकता है। जो दिल पर है वही अधिकारी बनता है। सच्चाई सदा शुद्ध बनाती है, सच्चाई सदा पवित्रता के नजदीक लाती है। सुख के सागर को अपना बनाने के लिए सच्चाई को साथी बनाना ही होगा। सच्चाई का आदि-मध्य-अंत खुशियाँ बरसाने वाला ही होगा व निश्चिन्तता प्रदान करने वाला ही होगा। इसलिए युवा भाइयो, सच तो बिठो नच, सच्चे बनो, अच्छे बनो, पक्के बनो।

7.उद्देश्यपूर्ण जीवन – युवाओ, बिना उद्देश्य के कोई नहीं जीता। लेकिन पैसा कमा लेना, पद प्राप्त कर लेना, कुछ डिग्रियाँ ले लेना, मकान बना लेना, सुख के साधन इकट्ठे कर लेना, प्याऊ खोल देना, थोड़ा-सा अनाज बँटवा देना, कुछ कंबल बँटवा देना – मात्र ये जीवन के उद्देश्य नहीं हैं। **युवाओ, पैसे के साथ संतुष्टता रूपी धन कमाना भी उद्देश्य हो, पद के साथ स्वमान का भी नशा हो, डिग्रियों के साथ गुणों की गहराई भी हो, मकान-दुकान साधन के साथ मन का ठिकाना, स्थायी घर, दान करने के लिए पर्याप्त ज्ञान का भण्डार, साधनों के साथ साधना, सोशल सर्विस के साथ शुभ भावनाओं का दान व खुशी का दान करने का वा सबको भगवान का बच्चा बनाकर उसके वर्से का अधिकारी बना देने का लक्ष्य भी हो।** युवाओ, ये सब कार्य आप इसी युवाकाल में ही कर सकते हो। क्या आपको यह जागृति है, अगर नहीं तो अब सचेत हो जाइये, कहीं माया आकर अपना वर्चस्व कायम न कर ले। स्वर्णिम संसार जब तक नहीं आ जाता तब तक उपरोक्त पुरुषार्थ में लगे रहिए।

(समाप्त)

तो कुछ बात बने

ब्र.कु. घमंडीलाल अग्रवाल,
गुड़गाँव

मानव में देवत्व समाए,
तो कुछ बात बने।
मानव अपने तक भी आए,
तो कुछ बात बने।।

लोभ, क्रोध या मोह नहीं है
जीवन सफल बनाते,
माया के कुचक्र में हरदम
दीन–हीन भरमाते,
अधरों पर अमृत वह पाए,
तो कुछ ....

मन पवित्र हो, तन पवित्र हो
झूमे भाईचारा
आँखों में अनुभूति तरंगित
सारा विश्व हमारा
मुक्त हँसी आकाश लुटाए
तो कुछ ....

अपना हो पुरुषार्थ अजूबा
अपने हों नव–सपने
दिया बहुत है आदिकाल से
जप ने अथवा तप ने
हर्ष वेदना का घर ढाए
तो कुछ ....

बाबा के बच्चे बाबा को
ले यदि नाम पुकारें,
कटुता के घट पल में फूटें
बरसें रस की धारें,
हाथ, हाथ का साथ निभाए
तो कुछ ....

राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस पर विशेष...

राजयोग – संपूर्ण सुरक्षा का आधार

• ब्रह्माकुमार मुकेश, वाराणसी

प्रकृति की हलचल मनुष्य को प्रारंभ से आतंकित करती रही है। घने वनों की सांय-सांय, कल-कल करती नदियों का बहाव, आकाश को छूती हुई पहाड़ों की ऊँची चोटियाँ, गरजता-उफनता समुद्र – सभी उसे बड़े रहस्यपूर्ण मालूम होते रहे हैं। प्रकृति के इस वृहद स्वरूप को देखकर उसने निर्णय किया कि इनसे लड़कर इन पर विजय तो नहीं पाई जा सकती, हाँ, इनसे सुरक्षा अवश्य की जा सकती है। इसके लिए उसने कई प्रकार के बाह्य सुरक्षा के उपाय ढूँढ़ लिए। बरसात से बचने के लिए छातों का निर्माण किया, गर्मी से बचने के लिए पंखे और ए.सी. बनाये, धूप और ठंड से बचने के लिए पक्के मकान बनाये, धरती पर एक-दूसरे से संबंध बनाने के लिए फोन तथा संचार साधन निर्मित किये, दूरियों को कम करने और सफर करने के लिए द्रुतगामी वाहनों और जहाजों का निर्माण किया। एक जगह बैठकर धरती के किसी कोने की घटना को सचित्र देखने के लिए टेलीविजन बनाया। इस तरह से मनुष्य ने बाह्य सुरक्षा के लिए अनेक साधनों को ढूँढ लिया। लेकिन, ढेर सारी सुरक्षा के साधन होते हुए भी आज मनुष्य को अनेक प्रकार की परेशानियों, असफलताओं, चिंता, भय, दुख, अशान्ति, मानसिक रोग तथा विकारों के वार ने असुरक्षित कर दिया है। इस कारण उसकी मन-बुद्धि में प्रसन्नता की जगह प्रश्नचिन्ह बना हुआ है कि आगे क्या होगा। अनचाहे डर, मानसिक रोग और विकारों को दूर करने के लिए उसने जिन रास्तों को खोजा, उनमें ही वह बुरी तरह से उलझता गया।

प्रथम है मन की सुरक्षा

मानव जाति को आंतरिक सुरक्षा का घेरा देने के लिए धार्मिक जगत ने भी जप, तप, दान, पूजा-पाठ, तीर्थयात्रा तथा धर्मग्रंथ आदि के कई नुस्खे प्रदान किये लेकिन फिर भी यह रास्ता क्षणभंगुर सुख-शान्ति का ही रहा है। संसार में मानवता की रक्षा कैसे की जाये, इस बात का उपाय किसी की बुद्धि में नहीं आ पा रहा है। कहा जाता है कि युद्ध या शान्ति की शुरुआत मन से होती है, उसी प्रकार, सुरक्षा का प्रारंभ भी मन की सुरक्षा से होता है। यदि मानव का मन सुरक्षित और शक्तिशाली है तो बाहरी बाधायें अपने आप अपना रास्ता माप लेती हैं।

पाँच महाविकार हैं मन के शत्रु

मन के शत्रु कौन हैं? मन को असुरक्षित कौन करते हैं? मन के शत्रु हैं पाँच महाविकार और उनके बाल-बच्चे। काम को महाशत्रु कहा गया है। जब मन पर इसका वार होता है तो बाह्य जगत में भी बहुत अफरा-तफरी मचती है। काम से आक्रान्त व्यक्ति लाज, शर्म भूल ऐसे कर्म करने पर उतारू हो जाता है, जो परिवार-समाज की शान्ति भंग हो जाती है। क्रोध भी कोई कम शत्रु नहीं है। आज चारों तरफ घटने वाली आपराधिक घटनाओं में से अधिकतर में इसी क्रोध का हाथ होता है। इसके कारण निर्दोषों का खून बह जाता है। लोभ के पंजे में जकड़ा व्यक्ति भी कइयों के हक-हिस्से छीनकर, धन-पदार्थों को नाजायज़ रूप से ताले में बंद कर कइयों की रोज़ी-रोटी पर डाका डाल देता है। मोह तो अंधा बनाने वाला है। यह विकार तन और मन की आँखों पर पर्दा डाल व्यक्ति को मैं-मेरे के गंदले जल में डाल देता है। अहंकार से ग्रसित व्यक्ति कोबरे की

तरह हरदम डंक फैलाये रहता है। जो भी सामने पड़ जाए, उसे ही डंक लगने की संभावना बनी रहती है।

भीतर उत्पात है तो बाहर शान्ति कैसे?

इन महाविकारों के साथ-साथ इनके बाल-बच्चे भी आत्मा को असुरक्षित, कमज़ोर करने में बड़े माहिर हैं। ईर्ष्या-द्वेष के वार से ठीक सोचने की बुद्धि नष्ट हो जाती है। बदले की भावना, भूकंप की तरह अंदर की स्थिरता को नष्ट कर देती है। यदि आत्मा इन विकारों रूपी कीड़ों से खोखली हुई पड़ी है तो व्यक्ति चाहे कितने ऊँचे पद पर हो, धन-मान और ज़िम्मेवारी वाला हो, वह न स्वयं सुरक्षित रह सकता है और न ही प्राकृतिक विपत्तियों या हिंसा-दंगों का शमन कर सकता है। जब उसके अपने भीतर ही उत्पात है तो वह बाहरी उत्पात को शांत कैसे करेगा।

भगवान है बिगड़ी बनाने वाला

अत: सर्व प्रकार की सुरक्षा का आधार है व्यक्ति की भीतरी मनोविकारों से रक्षा। इसका आधार है राजयोग का अभ्यास। **इस अभ्यास से हम अपने कमज़ोर मन को, भटकती बुद्धि को और कुसंस्कारों को प्रभु अर्पण कर देते हैं। जैसे कारीगर को बिगड़ती हुई चीज़ अर्पित कर देने पर वह उसको सुधार देता है, इसी प्रकार, कमज़ोर, पतित, विकारों से आक्रान्त आत्मा को भी, देह रूपी आवरण से न्यारा कर परमात्मा को सौंपने पर वह इसकी मरम्मत कर देता है अर्थात् सुधार देता है। इसलिए भगवान को बिगड़ी बनाने वाला कहते हैं।** वर्तमान समय सभी आत्मायें आंतरिक शक्ति के नाम पर खस्ता हालत में हैं। इस खस्ता हाल को देख भगवान सृष्टि पर अवतरित हो चुके हैं और पिछले 74 वर्षों से वे ज्ञान-योग सिखाकर आत्मा को निर्भय और निर्वैर बना रहे हैं। जहाँ निर्भय और निर्वैर आत्मायें रहती हों, वहाँ किसी प्रकार की असुरक्षा या भय हो ही नहीं सकता।

❖

कर्म कौशल ही तो योग है

सोनिया, कोल्हापुर

योगी बनने के लिए, कई लोगों के मन में सबसे पहले यही बात आती है कि संसार का त्याग करना पड़ेगा और भिक्षा मांगकर जीवनयापन करना पड़ेगा। एकांतवास में संन्यासी होकर रहने से ही योगी की पदवी मिलेगी, यह केवल भ्रम है।

परमात्मा कुछ भी छोड़ने को नहीं कहते, वे कहते हैं कि सहज होकर जिओ, स्वाभाविक स्थिति में रहो। स्वभाव (आत्म भाव) ही हमारा धर्म है। हमें स्वधर्म का त्याग नहीं करना है वरन् उसका विकास करना है। मन को अनासक्त करने के लिए इंद्रियों का दमन नहीं करना है। जीतना है आसक्ति को। विषयों के बीच अनासक्त होकर रहेंगे तो भोग हमें बांध नहीं पायेंगे। फिर तो भोगों के बीच भी तृष्णा की अग्नि प्रज्वलित नहीं होगी। इंद्रियों पर संयम होगा ईश्वरीय ज्ञान की समझ द्वारा, ज्ञान के मनन और ज्ञान की धारणा द्वारा।

कई तपस्वी जब तपस्या के पश्चात् लौटकर आते हैं तो अपनी दमित इंद्रियों से पीड़ित होते हैं। भोगी व अहंकारी बनकर तपस्या स्खलित करते हैं। हमें ऐसा नहीं करना है। हमें केवल तन से त्याग नहीं करना वरन् मन से भी करना है। विषयों के मध्य रहकर भी उनके होकर नहीं रहना। कर्म करते हुए भी कर्म में लिप्त नहीं होना। लेखनी से लिखें मगर मसि से हाथ काले न करें, ऐसा बाबा कहते हैं।

कर्म के अभाव में सृष्टि का अस्तित्व नहीं होता इसलिए कर्म का त्याग अनिष्टकारी है। कर्म कौशल ही तो योग है। ❖

ज्ञान-गंगाओं की गंगोत्री
इन्दौर का शक्तिनिकेतन

नव वर्ष की पूर्व संध्या 31 दिसम्बर 2010 को शान्तिवन में, परमात्म अवतरण की वेला में परमात्मा पिता ने इन्दौर हॉस्टल की कुमारियों पर विशेष प्यार एवं दुआओं की बरसात करते हुए कहा, ''इन्दौर की कुमारियों ने भी प्रोगेस अच्छी की है। सेवाकेन्द्र में भी मददगार बनती हैं। बापदादा कुमारियों को देख खुश होते हैं कि इन कुमारियों ने खुद अपने को तो बचाया लेकिन औरों को भी दिन-प्रतिदिन साथ दे उमंग-उल्लास में लाती रहती हैं इसलिए कुमारियाँ विश्व के आगे एग्जाम्पल हैं।''

दुनिया की मायावी चकाचौंध में जहाँ हर समय विकारों की दूषित हवा बहती रहती है, हर इंसान दैहिक आग में झुलस रहा है, ऐसे में शक्तिनिकेतन की ये कुमारियाँ अपने आपको सुरक्षित आशियाने में महसूस करती हैं। यहाँ पर कुमारियाँ न केवल अपनी लौकिक पढ़ाई पढ़ती हैं किन्तु, ईश्वरीय पढ़ाई पढ़कर भगवान से एक गहरा रिश्ता भी जोड़ती हैं, जीवन जीने के उसूल सीखती हैं। वर्ष 1984 से अब तक इस रूहानी उपवन से निकली करीब 400 कलियाँ, फूल बनकर देश-विदेश में ज्ञान, योग की खुशबू फैला रही हैं। प्रस्तुत हैं उनमें से कुछ के अनुभव –

शक्ति निकेतन में ही ईश्वर के प्रति मेरी लगन और समर्पण की जड़ें मजबूत हुईं

सन् 1985 से सन् 1991 तक का शक्तिनिकेतन में मेरा जीवन आध्यात्मिकता के अंकुरण का जीवन था। मात-पिता की इकलौती बेटी मैं बड़े नाजुक स्वभाव वाली थी। फिर भी मुझे वहाँ रहने में ज़रा भी तकलीफ़ नहीं हुई क्योंकि ममता और प्यार की पालना मिलती रही।

ब्र.कु. संगीता
बोरीवली (मुम्बई)

मुझे ईश्वरीय ज्ञान भले ही बचपन से था परन्तु समझ, ईश्वर के प्रति लगन और समर्पण की जड़ें यहाँ रहकर ही मजबूत हुईं। ओमप्रकाश भाईजी के तेजस्वी और ओजस्वी स्वरूप ने तथा दीदी ने लक्ष्य के प्रति जो अमूल्य दिशा निर्देशन दिए उनसे मुझे भरपूर संबल प्राप्त हुआ। हॉस्टल में सुबह जल्दी उठने से लेकर हर काम ज़िम्मेदारीपूर्वक करना पड़ता है। रात में सोने से पहले दीदी से मिलना, सत्यता के गुण भरना, पढ़ाई के प्रति एकाग्र होना तथा बर्तन साफ करने से लेकर निर्भीकतापूर्वक भाषण करने तक की कला को सीखना किसी महाआनंद के अनुभव से रूबरू होना होता था। हॉस्टल जीवन के बाद इन्दौर जोन में जबलपुर, जगदलपुर और भिलाई में ईश्वरीय सेवा द्वारा अपनी धारणाओं की नींव मज़बूत कर मुझे 1996 से मुंबई में बोरीवली सेवाकेन्द्र पर सेवा करने का सौभाग्य मिला।

(लेखिका 20 वर्षों से ईश्वरीय सेवा में समर्पित है)

श्रेष्ठ संस्कार प्राप्ति के लिए शक्तिनिकेतन जैसा योग्य वातावरण दुनिया में दुर्लभ है

ब्र.कु. शालिनी
माउण्ट आबू

मैं बहुत सौभाग्यशाली हूँ जो मुझे बचपन से ईश्वरीय ज्ञान और अलौकिक पालना मिली तथा आदर्श व्यक्तित्व बनाने का संकल्प भी जगा। जब मैं हॉस्टल में प्रवेश लेने गई तो वह मुझे हॉस्टल नहीं

बल्कि रूहानी फरिश्तों की सभा लग रही थी। मैंने एक धारणा पर विशेष अटेन्शन रखा कि मेरे से कोई भी ऐसा कर्म न हो जिससे बड़ों को एक्स्ट्रा समय देना पड़े। निमित्त आत्माओं की क्लासेस में मुझे पूरी आशा और शक्ति मिलती रही। मैंने दीदीजी को हमेशा माँ के रूप में, आदर्श मार्गदर्शिका के रूप में देखा। मैं उनके हर कर्म की सूक्ष्मता को देखती और लगता था कि मेरे लिए बाबा की आशाओं को पूर्ण करना सम्भव है।

हॉस्टल के पावन वातावरण में मैंने पाया कि मेरी सूक्ष्म शक्तियाँ, विशेषताएँ विकसित हो रही हैं। गम्भीरता, समाना, बड़ों का दिल जीतना, उनका विश्वासपात्र बनना आदि गुणों का आकस्मिक प्रवेश मन में होता गया। इन्हीं विशेषताओं से मैं बड़ों के करीब आती गई और मुझे मधुबन पावन भूमि पर आदरणीया दादीजी की सेवा का भी परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। आज भी मैं 'दादी कॉटेज' में सेवायें देती हूँ। मुन्नी दीदी के पास रहने का विशेष सौभाग्य मुझे मिला है। मैं मन ही मन सोचती हूँ कि मुझमें ऐसा क्या था कि मुझे मेरे सौभाग्य ने मालामाल कर दिया, तो अन्तर्मन से यही आवाज आती है कि यह सब अच्छे संस्कारों के कारण ही है जो कि मुझे हॉस्टल से प्राप्त हुए।

जीवन को श्रेष्ठ बनाने की कलाएँ सीखी

मैंने सन् 1991 में केरल के त्रिवेन्द्रम् सेन्टर से ज्ञान प्राप्त किया था। दसवीं की पढ़ाई पूरी करने के बाद बाबा ने मुझे इन्दौर हॉस्टल में रहने का गोल्डन चांस दिया। हॉस्टल में आकर, इस श्रेष्ठ संगठन में रहकर मैंने ज्ञान को सही तरीके से समझा। मैंने हर प्रकार के घरेलू और बाहरी काम करने की कला सीखी, और तो और एक साल में ही मेरी हैंडराइटिंग भी बहुत अच्छी हो गई। हॉस्टल में मैं दुनिया के हर प्रकार के नकारात्मक वातावरण से सेफ रही। मुझे श्रेष्ठ ब्राह्मण संग मिला और मुख्य बात यह है कि मैं बापदादा और बड़ों की नजरों में रही। मुझमें तीव्र पुरुषार्थ करने की लगन लगी। मुझे सचमुच गर्व है कि मैं इस रूहानी पालना की अधिकारी बनी।

ब्र.कु. अंजली
नाइजीरिया

(लेखिका 2 वर्षों से ईश्वरीय सेवा में सेवारत है)

शक्तिनिकेतन के बारे में विशेष जानकारी

वर्तमान में यहाँ संपूर्ण भारत के लगभग 24 प्रांतों एवं नेपाल से लगभग 150 कन्याएँ निवास करती हैं। यहाँ छठी से लेकर ग्रेज्यूएशन तक की अध्ययनरत कन्याएँ हैं। यहाँ विभिन्न कलाएँ जैसे पाककला, चित्रकला, संगीतकला, नृत्यकला, अभिनय, निबंधलेखन, भाषण, नाट्य कला, कविता, गृहसज्जा, पेंटिंग, दूरभाष, कम्प्यूटर, स्वागत प्रबंधन, मेहमान नवाज़ी आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है । इस सत्र में सर्वाधिक कन्याओं ने विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में प्रथम/द्वितीय स्थान प्राप्त किया। नई कन्याओं के प्रवेश हेतु कृपया जनवरी से अप्रैल माह तक संपर्क करें। प्रवेश की प्रक्रिया मई, जून माह से ही प्रारंभ हो जाती है।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें :-

बी. के. करुणा
शक्तिनिकेतन (दिव्य जीवन कन्या छात्रावास),
ओमशांति भवन, न्यू पलासिया, ज्ञान शिखर,
गेट नं. 2, इन्दौर (म.प्र.)-452001
फोन नं. 0731-2531631, मो. 94253-16843,
फैक्स: 0731-2430444
ई.मेल : shaktiniketan@gmail.com,
shaktiniketan.ind@bkivv.org

विशेष सूचना:- जिन बहनों ने शक्तिनिकेतन इंदौर हॉस्टल से शिक्षा ग्रहण की है, वे जहाँ भी हैं (1) अपना नाम, (2) जिस सेवाकेन्द्र पर हैं, उसका पूरा पता (3) फोन नं. अथवा मोबाइल नं. (4) ई-मेल एड्रेस हमें शीघ्र अतिशीघ्र हॉस्टल के पते पर भेजने का कष्ट करें।

कैदी है तन, आजाद है मन

गतांक से प्रारंभ हुए इस लेख में बनारस जेल में बंद अनेक कैदियों के वैचारिक, मानसिक, आध्यात्मिक परिवर्तन का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत हैं कुछ अन्य कैदियों के जीवन परिवर्तन की अनुभूतियाँ...

मज़ा बन गई सज़ा

ज़िला बाराबंकी, गाँव बंदों सराये निवासी, ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश कहते हैं –

गरीब परिवार में जन्मे मुझको विकल्पों (खराब संकल्पों) ने अपने महाजाल में फँसा रखा था। मैं अजामिल की तरह पाप किया करता था। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि मुझ पर हरदम हावी रहते थे। एक दिन क्रोध का भूत सवार हुआ, किसी की जान चली गई और मुझे आजीवन कारागार में बंद कर दिया गया। मेरी मुसीबत दिनों-दिन बढ़ती चली गई। मैं हमेशा तनाव में रहा करता था, सोचता था, बदला ज़रूर लेकर रहूँगा।

एक दिन ब्रह्माकुमार गोविन्द भाई से मुलाकात हुई। उन्होंने बहुत ही प्रेम से पूछा, आपको ज्ञान समझ में आ रहा है? हमारा जवाब 'हाँ' में था। फिर वे बोले, आप कोर्स कर लेंगे तो और बातें भी आपकी समझ में आयेंगी। उन्होंने यह भी बताया कि आप लोगों को मुरली भी सुनाई जायेगी। यह बात सुनकर खुशी महसूस हुई। इसके बाद कारागार प्रांगण में एक सेन्टर का उद्घाटन हुआ। उद्घाटन समारोह वरिष्ठ अधीक्षक बी.के.जैन के माध्यम से हुआ। हम सभी नियमित क्लास करने लगे। ज्ञान, गुणों से शिव बाबा मुझे सजाने लगे और जो कमज़ोरियाँ थीं, वे निरंतर योग से दूर होने लगी। एक दिन परमपिता शिव बाबा की याद में बैठा हुआ था कि अचानक शिव बाबा ने आत्मा का साक्षात्कार कराया। मुझे महसूस हुआ कि भ्रकुटि के मध्य एक सफेद बिन्दु चमक रहा है। अब मुझे निश्चय हो गया है कि मेरा तो एक बाबा, दूसरा न कोई, सारे संबंध इस शरीर के हैं, मैं तो एक अजर, अमर, अविनाशी आत्मा हूँ। रोज़ अमृतवेले उठकर बाबा से रूहरिहान करता हूँ और बाबा मुझे वरदान देकर ज्ञान, गुण, शक्तियों से सजाते हैं। अब मैं बिल्कुल तनावमुक्त हो गया हूँ।

जेल बनी आश्रम

ग्राम अगहुआ, जिला बलरामपुर निवासी, ब्रह्माकुमार गुल्ले भाई कहते हैं –

पंद्रह वर्ष की आयु में मैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की जेल में कैद हो गया। सत्रह वर्ष का हुआ तो कुछ कारण से एक व्यक्ति से झगड़ा हुआ, कत्ल हो गया। इसी कारण जेल आना पड़ा, तनाव बढ़ता गया। मैं अपने मन में सोचा करता था कि जिसने मुझे जेल भेजा, मैं उनसे बदला लेकर रहूँगा। जेल में ब्रह्माकुमारी बहन-भाइयों से मुलाकात हुई। ब्रह्माकुमार भाई ने पूछा, आप टेन्शन में क्यों रहते हैं? हमने सारी बात बताई तो वे बोले, आप सात घंटे का समय दीजिए, आप का सारा टेन्शन दूर हो जायेगा। फिर हमारा आत्मा और परमात्मा के ज्ञान का कोर्स शुरू हो गया। बाबा का ज्ञान मुझे बहुत अच्छा लगा और मैं नियमित क्लास करने लगा। प्रतिदिन बाबा से योग लगाने लगा। मैंने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि भगवान से स्वयं बातें कर पाऊँगा। अब मुझे शिव बाबा का सत्य ज्ञान प्राप्त हो चुका है। मैं बहुत शुक्रगुज़ार हूँ कि मीठे बाबा, आपने हमारा तीसरा चक्षु खोल दिया और सृष्टि चक्र का ज्ञान देकर, आदि-मध्य-अंत का

रहस्य बताकर धन्य-धन्य कर दिया। मैं बहुत भाग्यवान हूँ जो भगवान की गोद का बच्चा बना हूँ। सत्य बाप के रूप में भगवान मेरी पालना कर रहे हैं, सत्य टीचर के रूप में मुझे सत्य गीता-ज्ञान सुना रहे हैं और सतगुरु के रूप में जीवन रूपी नैया को पार लगा रहे हैं। मैं हमेशा शिव बाबा की छत्रछाया में रहता हूँ। प्रतिदिन दो-तीन बार मुरली सुनता हूँ। बाबा के ज्ञान-गुणों की वर्षा होती है मुरली के माध्यम से। अब तो एक मेरा बाबा ही मेरा संसार है। मैं बाबा का और बाबा मेरा, यही गीत गाया करता हूँ। जेल अब जेल नहीं बल्कि आश्रम जैसी लगती है। आज मैं बिल्कुल टेन्शन से मुक्त हो गया हूँ। बाबा की याद में मस्त रहता हूँ।

अपने को बहुत हलका महसूस करता हूँ

मुन्ना सिंह कहते हैं –

मेरा लौकिक जीवन विषय-विकारों, अवगुणों से ग्रस्त था। माँस, मदिरा, बीड़ी, सिगरेट, तंबाकू आदि सभी प्रकार के दुर्गुण मुझमें व्याप्त थे। इन्हीं दुर्गुणों के कारण कत्ल का मुक़द्दमा लग गया और आजीवन सज़ा पड़ गई। वाराणसी केन्द्रीय जेल में आया तो पिछली ग़लतियों व बर्बादी का एहसास करके बहुत विचलित व परेशान था। जेल में एक दिन मैंने ओम शान्ति की चर्चा सुनी। फिर सात दिन का कोर्स किया। नियमित वहाँ जाने लगा। धीरे-धीरे नशे की आदत छूट गई और ईश्वरीय ज्ञान से क्रोध समाप्ति के साथ जीवन-शैली में विशेष परिवर्तन होने लगा। परमात्मा और आत्मा का ज्ञान होने से विकार और दुर्गुण स्वत: समाप्त होने लगे। अब मैं बाबा की श्रीमत पर चलते हुए अपने आपको बहुत हल्का महसूस करने लगा हूँ। मैं संकल्प करता हूँ कि नशामुक्त, क्रोधमुक्त, अहंकारमुक्त, पवित्रता से परिपूर्ण जीवन बनाकर ईश्वरीय विश्व विद्यालय के द्वारा दी गई श्रीमत का आजीवन पालन करूँगा।

बैठे-बैठे जीने का सहारा मिल गया

बलरामपुर के महाबली और चंद्रबली भी कहते हैं –

भावावेश में लिए गए निर्णय ने हमें कहीं का नहीं छोड़ा। उम्रकैद की सज़ा मिली तो भी बदले का जनून सिर पर सवार था लेकिन जेल अधिकारियों का व्यवहार और परिसर के भक्तिभाव वाले माहौल ने हमें बता दिया कि 'अहिंसा परमो धर्म:'। हमें न केवल अपनी ग़लतियों का एहसास हुआ वरन् जेल में ही जीने का सहारा भी मिल गया।

समस्याओं का समाधान हो गया

बलिया के रामसिंह यादव कहते हैं –

भूमाफियाओं की गलत सोहबत का परिणाम भुगत रहा हूँ। हमने ऐसी ज़िन्दगी की कामना कभी नहीं की थी। शुक्र है ऊपर वाले का कि भले जेल में हूँ लेकिन इस परिसर ने हमें सभी समस्याओं से निजात का रास्ता दिखा दिया। अब तो हमें तामसी भोजन से भी नफरत हो गई है।

जेल में जगा भाग्य

गोंडा के ओंकारनाथ श्रीवास्तव और पीलीभीत के छोटेलाल कहते हैं –

गरीबी और पारिवारिक कलह ने हमें कैदी का जीवन जीने के लिए विवश कर दिया। आश्चर्य इस बात का है कि हमारा भाग्य जेल में आकर जगा। इस परिसर ने हमें सच की राह दिखाई। ज्ञान, प्यार और नि:स्वार्थ सेवा का जो माहौल मिला, उसने हमारी सोच को बदल दिया।

इसे जेल मत कहिए

सुलतानपुर के महंथ सिंह और सीतापुर के ओमकार कहते हैं –

इसे जेल मत कहिए, यह आश्रम है। हम जैसे अभिमानी और क्रोधी जिन्हें कोई सुधार नहीं सका, उन्हें प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के शिक्षकों ने न केवल सुधारा वरन् ज़िंदगी की दिशा ही

बदल दी। जेल में आये तब काफी मानसिक तनाव से जूझ रहे थे, जेल से छुटकारे की सोच रहे थे लेकिन अब मन रम गया है।

कहा गया है, हर अपराधी का एक भविष्य होता है। आज का अपराधी कल का संत बन सकता है। पौराणिक कथा में दुर्दान्त डाकू को संत बनते दिखाया गया है। जब ऋषियों के एक छोटे-से वाक्य से डाकू की सोई आत्मा जाग सकती है तो स्वयं ऋषियों के भी ऋषि परमपिता परमात्मा शिव के मधुर महावाक्यों से क्या चमत्कार नहीं हो सकता। जीवन को श्रेष्ठता की तरफ परिवर्तन कर देने वाले भगवान के इस अनोखे चमत्कारिक कार्य को बार-बार नमस्कार! अनुभवों की इस लंबी कड़ी में अन्य कई आत्मायें भी हैं। अवसर मिलने पर उनसे भी लाभ उठाया जायेगा। ***(समाप्त)***

दादी ने सिखाया रिगार्ड देना

ब्रह्माकुमार भारत भूषण, पानीपत

कोई-कोई महान विभूति जीवन में ऐसी छाप छोड़ जाती है जो भूल नहीं पाते हैं। ऐसी ही छाप थी शेरे पंजाब दादी चंद्रमणि के धारणामूर्त जीवन की। यह मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे उनके अंग-संग रहने का अनेक बार मौका मिला। उनसे अनेक पुरुषार्थ की बातों की लेन-देन की। उनके साथ का एक अनुभव इस प्रकार है –

सन् 1978 में जब मैं ज्ञान में चला तब कुछ भाई-बहनों का एक ग्रुप सेवाकेन्द्र की बहनों से असंतुष्ट होकर अलग क्लास करने लगा। मैं भी उनमें शामिल था। दादी चंद्रमणि जी समझाने के लिए आये, सभी को बहुत समझाया लेकिन हम सब मिले हुए थे, कोई नहीं समझा। आखिर अलग से एक-एक को बुलाकर समझाया गया। जब मेरा नंबर आया तो अमीरचन्द भाई जी ने दादी जी को मेरा परिचय देते हुए बहुत महिमा की, 'दादी जी, यह बहुत पावरफुल आत्मा है, इसने नीलोखेड़ी में 25 कुमार ज्ञान में चला दिये हैं।' दादी जी ने कहा, यह है तो बहुत पावरफुल लेकिन कुसंग में इसका बेड़ा गर्क हो जायेगा। फिर प्यार से मुझे अपने समीप बुलाकर कहा, देखो भारत भूषण, हमेशा याद रखो, निमित्त बहनों को किसने बिठाया है? बाबा ने बिठाया है, इसलिए निमित्त का डिसरिगार्ड माना बाबा का डिसरिगार्ड। समझाकर दादी जी तो चले गये लेकिन मुझे सारी रात नींद नहीं आई। बार-बार दादी जी के ये शब्द कानों में गूंजते रहे कि बहनों को किसने निमित्त बनाया है। अगले ही दिन मैं 25-30 कुमारों को साथ ले करनाल सेवाकेन्द्र पर पहुँचा, जहाँ दादी बृजपुष्पा एवं सत्या बहन रहती थी। उनसे राखी बंधवाकर यह प्रतिज्ञा की कि जीवन में कभी निमित्त बहनों का डिसरिगार्ड नहीं करूँगा। सचमुच, दादी जी से ऐसा वरदान मिला जो पिछले 32 वर्षों में मैंने कभी किसी छोटी या बड़ी बहन का डिसरिगार्ड नहीं किया, सदा उन्हें सम्मान दिया। दादी बृजपुष्पा जी ने मेरे इस परिवर्तन के बारे में दादी चंद्रमणि जी को अवगत कराया। अगली बार दादी जी जब मुझे मिले तो इतना स्नेह दिया जिसे मैं भुला नहीं सकता और मैं सदा के लिए उनके प्रति समीप आत्मा बन गया।

कैसी भी विकराल वा विकट परिस्थिति हो, दादी चंद्रमणि जी कभी भी घबराते नहीं थे। वे पूरी बहादुरी से परिस्थिति का सामना करते थे। बहुत निर्भीक अवस्था थी उनकी। इसलिए बाबा उन्हें शेरे पंजाब कहते थे। सचमुच इस शेरनी शक्ति के ऊँचे स्वरूप को देख परिस्थिति घबराती थी।

आइये, उनके स्मृति दिवस (11 मार्च) पर हम सभी यह शुभ संकल्प लें कि उनकी विशेषताओं को जीवन में धारण करेंगे। यही उनकी शिक्षाओं का सच्चा सम्मान है। ❖

सबसे बड़ी जीत

• ब्रह्माकुमारी आशा, चित्तौड़गढ़

विश्व का इतिहास ऐसे अनेक महत्त्वाकांक्षी राजा-महाराजाओं के कारनामों से भरा पड़ा है जिन्होंने जगतजीत बनने के लिए अनेक प्रयास किये। दूसरों पर जीत पाने के लिए उन्होंने भयंकर युद्ध किये। दूसरों पर राज्य करने की चाहना में दिन-रात एक किये। इसमें कई बर्बाद हो गये और कई जीते भी तो अल्पकाल की राजाई मिली जिसे भय और चिंता के साथ भोगा। अंग्रेज़ों ने भी 'फूट डालो और राज्य करो' की नीति अपनाई परंतु कुछ समय तक राज्य करके उन्हें भी अधीनस्थ देशों को स्वतंत्र करना पड़ा।

दुनिया में असंभव कुछ भी नहीं है। हर प्रकार की उपलब्धि हो सकती है पर तरीका ठीक अपनाना पड़ता है। राकेट को तेज़ गति से हवा में उड़ाने की एक विधि है, रेलगाड़ी को तेज़ गति से दौड़ाने की भी एक विधि है, इसी प्रकार विश्व पर साम्राज्य स्थापित करने की भी एक विधि है जो बहुत ही सरल है। जो भी इच्छुक हो, इस विधि को ध्यान से पढ़े। विधि है, पहले स्वराज्य फिर विश्व राज्य। दूसरों पर राज्य करने से पहले अपने पर राज्य कीजिये। दूसरों को सीधा करने से पहले अपने को सीधा कीजिये। यदि दूसरा सीधा हो गया और आप टेढ़े ही रहे तो आपके नीचे (Under) वह फिर भी नहीं चलेगा क्योंकि टेढ़े के साथ सीधे का मेल बैठेगा नहीं।

स्वराज्य अर्थात् आत्मा का अपनी कर्मेन्द्रियों पर राज्य। आत्मा की सूक्ष्म कर्मेन्द्रियाँ हैं मन, बुद्धि एवं संस्कार तथा शरीर की स्थूल कर्मेन्द्रियाँ हैं आँख, नाक, कान, मुख एवं हाथ। इन आठों पर शासन करना ही स्वराज्याधिकारी बनना है। स्वयं पर राज्य करना ही विश्व की सबसे बड़ी जीत है। वर्तमान कलियुगी मनुष्य दूसरों पर राज्य कर उन्हें अपने अधीन करना चाहते हैं लेकिन खुद किसी के भी अधीन नहीं होना चाहते जबकि उन्हें यह पता ही नहीं कि वे खुद ही माया के अधीन हैं जिस कारण दुखी-अशांत होते रहते हैं। दूसरों को भयभीत करके, हिंसा, नफरत, वैर-विरोध फैलाकर किसी को जीतना असंभव है। अल्पकाल के लिए जीत भी लें तो उसमें खुशी, स्नेह एवं निर्भयता नहीं रहती। और ही आत्मा पाप के बोझ से भारी होती रहती है। लेकिन स्वराज्य का तो आधार ही स्नेह एवं शान्ति है। अर्जुन ने ईश्वरीय ज्ञान का अर्जन कर स्व पर शासन किया जिससे वह सर्वप्रिय बना पर दुशासन ने दूसरों को अधीन करने व अपमानित करने के कुकृत्य किये इसलिए उसका पतन हो गया।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा ने, गुप्त तपस्या द्वारा स्व पर ऐसा राज्य किया जो आने वाले सतोप्रधान विश्व पर अटल-अखण्ड राज्य का भाग्य प्राप्त कर लिया। हमारी तपस्विनी दादियों, दीदियों व भाइयों ने भी उनके कदमों पर कदम रख स्वराज्य प्राप्त किया है। यही विश्व की सबसे सुखदायी एवं सबसे बड़ी विजय है। इस विजय के आगे प्रकृति भी नतमस्तक हो जाती है। हम सभी भी अपने आपको पूरा वश में करके, विश्वराज्य अधिकारी बनें एवं अनेकों को भी बनायें। ❖

जैसे सूर्य अपनी रोशनी से अंधकार को दूर कर देता है और अपनी किरणों के बल से कई चीजों को परिवर्तित भी कर देता है, ऐसे ही आप भी मास्टर ज्ञानसूर्य बन प्राप्त हुई सुख-शान्ति की किरणों से और सकाश से मनुष्यात्माओं को दुख-अशान्ति से मुक्त करो। मनसा सेवा से, शक्तिशाली वृत्ति से वायुमण्डल को परिवर्तित करो।

सम्बन्ध एक परमपिता से

• **ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर**

एक बार एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी में शिवलिंग को प्रदर्शित किया गया था और उसके आधार से परमपिता परमात्मा शिव का यथार्थ परिचय दिया जा रहा था। आगंतुकों से एक छोटा-सा सवाल पूछा गया, आप सामने क्या देख रहे हो? उनके जवाब होते थे, भोलेनाथ शंकर को देख रहे हैं, शिवलिंग को देख रहे हैं, भगवान को देख रहे हैं, महाकालेश्वर को देख रहे हैं आदि-आदि। उन आगंतुकों में से एक का नाम पूछा गया। उसने अपने शरीर का नाम बताया, मनमोहन। उनसे फिर यह सवाल किया गया कि मान लो, आपका बच्चा स्कूल से अपने किसी मित्र को लेकर घर आया, आप सामने बैठे हैं, तो वह आपका क्या परिचय देगा? मनमोहन जी का उत्तर था, मेरा पुत्र कहेगा कि ये मेरे पापा हैं। हमने पूछा, आपका पुत्र यह भी तो कह सकता है कि ये मनमोहन जी हैं। इस पर मनमोहन जी व अन्य उपस्थित व्यक्ति बोल पड़े कि ऐसा कहना बहुत अशोभनीय होगा। भला बेटा अपने पिता का नाम कैसे ले सकता है! हमने कहा, अभी-अभी आपमें से किसी ने भी परमपिता शिव की पिण्डी के लिए 'परमपिता' शब्द का प्रयोग नहीं किया। सभी ने उनके नाम ही लिये हैं। **हालांकि आप सभी जानते हैं कि भगवान हम सभी मनुष्य आत्माओं के परमपिता हैं, फिर भी आप उनका नाम ही लेते हैं, क्यों? क्योंकि परमपिता शिव से आपने संबंध जोड़ा ही नहीं है। बिना संबंध के यदि किसी से कुछ प्राप्त करने की मंशा होती है तो उसे स्वार्थ कहा जाता है।** सभी संबंधों में 'पिता-पुत्र' का संबंध सबसे अनूठा होता है क्योंकि इस संबंध से सहज प्राप्ति होती है। बिना मांगे ही पिता की सारी जायदाद पुत्र को मिल जाती है। यही एक संबंध है जिसमें एक पिता अपने पुत्र को अपने से भी ज्यादा कामयाब होते देख खुश होता है।

यह सुनकर सबने अपनी ग़लती स्वीकार की। फिर इस ग़लती के कारण पर चर्चा की गई और परमपिता शिव परमात्मा का उन्हें संक्षिप्त परिचय दिया गया तो उन्होंने स्वीकार किया कि परमपिता शिव का यथार्थ परिचय ना होने के कारण ही वे उनसे संबंध नहीं जोड़ पाये हैं।

कहीं हम रॉयल भिखारी तो नहीं

उनसे अगला सवाल पूछा गया कि आपके दरवाज़े पर जब कोई भिखारी आता है तो अक्सर कहता क्या है? कइयों ने जवाब दिया, वह कहता है, 'दया करो', 'कृपा करो', 'बस दो रुपये दे दो या एक रोटी दे दो', 'ज़रा मदद कर दो, आपकी बड़ी मेहरबानी होगी' इत्यादि। फिर पूछा गया, जब आप मंदिर में जाते हो तो आपके शब्द क्या होते हैं? सभी ने सकुचाते हुए स्वीकार किया कि कुछ ऐसे ही शब्द हमारे भी होते हैं परंतु हम दो-चार रुपये नहीं बल्कि कुछ ज्यादा ही मांगते हैं। **विचार कीजिए, जब हमें अपने दरवाजे पर भिखारी का आना अच्छा नहीं लगता है, तो क्या भगवान को मंदिर के दरवाज़े पर रॉयल भिखारी का आना पसंद आता होगा!** आप मंदिर में जो 11 रुपये, 21 रुपये या 101 रुपये की तुच्छ भेंट चढ़ाते हो, तो क्या आपने भगवान को उसी के लायक समझा है? क्या इसकी एवज में वह आपको बगैर श्रम किये सब कुछ दे देगा? मज़ा तो तब है जब मांगा कुछ ना जाये और सब कुछ मिलता जाये। यह तब ही संभव है जब भगवान से पिता-पुत्र का संबंध जोड़ा जाये।

करोड़ों बच्चों का परमपिता खो गया

आज टीवी व समाचार पत्रों के माध्यम से खो गये लोगों के बारे में सूचनायें प्रकाशित होती रहती हैं। जिनका कोई संबंधी खोया नहीं है, वे

उन सूचनाओं को देखते हुए भी अनदेखा करते रहते हैं परंतु उन्हें पता नहीं कि पूरा विश्व ही एक 'खोया-पाया सूचना केन्द्र' बन गया है। आज लगभग सभी मनुष्यों की मनोदशा वैसी ही हो गई है जैसी कि एक खो गये व्यक्ति की होती है। उन्हें पता नहीं कि वे क्यों परेशान रहते हैं। उन्हें पता नहीं कि वे कहाँ से आये हैं और अंत में कहाँ जाना है। उन्हें पता नहीं कि जीवन में सुख-शान्ति क्यों नहीं मिल पा रही। मन्दिर, मस्जिद, चर्च व गुरुद्वारों में वे 'उससे' मांगते हैं जिसे वे यथार्थ रीति जानते ही नहीं। पूरे विश्व में इस समय एक महाकुंभ का मेला चल रहा है जिसमें किसी पिता का बच्चा नहीं खोया बल्कि करोड़ों बच्चों का परमपिता खो दिया गया है। लाखों की भीड़ में से एक बच्चे को ढूँढ़ लिया जाता है परंतु अभी करोड़ों की भीड़ के द्वारा उस 'एक' को नहीं ढूँढ़ा जा सका है। ऐसे में वे परमपिता शिव इस समय पूरे विश्व में ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियों के माध्यम से अपने नाम, रूप, देश, काल, गुण व कर्त्तव्यों की घोषणा कर रहे हैं। जब कोई बच्चा खो जाता है तो पिता व पुत्र दोनों एक-दूसरे को ढूँढ़ने का भागीरथ प्रयास करते हैं परंतु अभी एक परमपिता को उनके करोड़ों बच्चों ने खो दिया है और उनका यथार्थ परिचय ना होने के कारण वे उनकी जगह भिन्न-भिन्न देवताओं या गुरुओं को अपना परमपिता मान रहे हैं। आमतौर पर भक्त पूछते हैं कि हम परमात्मा को कैसे पायें? उन्हें पूछना चाहिये कि हमने परमात्मा को कैसे खोया? खोने के कारण का ज्ञान ही पुन: पा लेने की दिशा में पहला कदम है।

सुनाने के साथ भगवान की सुनिये भी

एक पुत्र अपने पिता से हर प्रकार की बातें करता है, उसी प्रकार भक्त को भी अपने इष्टदेव से खुलकर बातें करनी चाहिएँ और यह अनुभव करने का प्रयास करना चाहिये कि इष्टदेव का क्या उत्तर है। यदि भक्त में यह भावना है कि यह जड़ मूरत भला कैसे उत्तर दे सकती है, तो फिर ऐसी पूजा का क्या प्रयोजन? **एक रटी-रटाई आरती को नित्य गा देने से यह अच्छा है कि उस परमपिता से अपने सारे गिले-शिकवे बयान कर फिर उसकी भी सुनने का प्रयास किया जाये। मात्र उसे माना ही न जाये बल्कि उसकी भी मानी जाये।**

यह विचारणीय बात है कि यदि इष्टदेव मुखर हो पड़ें तो वे भक्त को क्या कहेंगे? निश्चित रूप से वे भक्त को अपने अधिष्ठाता शिव का परिचय देकर यही कहेंगे कि जिस द्वारा मुझे यह देवपद प्राप्त हुआ, अब तुम सीधे उससे जुड़ो और मुझ जैसा देवपद प्राप्त करो। 'जुड़ने' की क्रिया संबंध के आधार से होती है और सर्वोच्च प्राप्ति का आधार है 'पिता-पुत्र का संबंध'। सभी इष्टदेवों को यदि सर्वोच्च प्राप्ति हुई है तो वे निश्चित रूप से, सर्व आत्माओं के परमपिता शिव से संगमयुग पर 'पिता-पुत्र' के संबंध में आये होंगे। आइये, अब भगवान के साथ पिता-पुत्र का संबंध कायम कर हम भी इष्टदेव बनें। ❖

ग्लोबल हॉस्पिटल में महत्त्वपूर्ण चिकित्सा सर्जरी कार्यक्रमों की जानकारी

घुटने व कूल्हे के जोड़ प्रत्यारोपण सर्जरी सुविधा
(Regular Knee and Hip Replacement Surgery)
दिनांक : 24 से 27 मार्च, 2011
सर्जरी : डॉ. नारायण खण्डेलवाल, मुम्बई से कुशल व अनुभवी सर्जन
(Trained in U.K., Australia and Germany)
पूर्व जाँच के लिये केवल घुटने व कूल्हे के ऑपरेशन के इच्छुक रोगी संपर्क करें –
डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, फोन नं. 09413240131
फोन: (02974) 238347/48/49 **वेबसाइट**: www.ghrc-abu.com
फैक्स: 238570 **ई-मेल**: drmurlidharsharma@gmail.com